

प्रणामी और निजानन्दी

दि शिया मुस्लिम्स

परिचय

यह डॉक्यूमेंट 'प्रणामी और निजानंद संप्रदाय' पर शोध करने के बाद लिखा गया है । जो श्रीकृष्ण के भक्त होने का दावा करते हैं, लेकिन अल्लाह और मुहम्मद की पूजा करते हैं । इस डॉक्यूमेंट में प्रमाण बताने के लिए चित्रों के साथ-साथ उनके धर्मग्रंथों के कई श्लोक और रीतियां शामिल हैं ।

इसी तरह का एक शोध 2002 में फ्रांस की फिलॉसफर 'डोमिनिक सिला खान' ने भी किया था, जिन्होंने 'द प्रणामी फेथ: बियॉन्ड हिंदू एंड मुस्लिम' नामक एक छोटी सी किताब प्रकाशित की थी, जिसमें उन्होंने बताया था कि कैसे प्रणामी 'निज़ारी इस्माइली शिया मुसलमान' हैं । किताब निजी प्रसार के लिए थी, लेकिन किसी तरह सूरत प्रणामी मंदिर के एक पुजारी तक पहुँच गयी और उन्होंने इसे जयपुर भेज दिया । इसके बाद प्रणामियों ने भय के कारण उस किताब की सभी उपलब्ध प्रतियां खरीदने की कोशिश की ।

यह प्रणामी परंपरा पर उनका शोध ही था जिसमें बताया गया था कि प्रणामियों के साथ गांधी के जुड़ाव को किस प्रकार कम महत्व दिया गया है । गांधी ने केवल यह स्वीकार किया कि उनकी मां प्रणामी थीं और उनके बचपन में कई लोग सोचते थे कि वे मुस्लिम हैं । इस संप्रदाय का पवित्र ग्रंथ 'क़ुलज़म शरीफ' प्रणामी और निजानंद धर्म को इस्लाम या दीन इस्लाम के रूप में परिभाषित करता है ।

इसलिए आप इस डॉक्यूमेंट को पढ़ें और दूसरों के साथ शेयर करें, जिससे सभी ऐसे संप्रदायों से सावधान रह सकें, जो स्वयं की वास्तविक पहचान को गुप्त रखकर लोगों को मुर्ख बनाते हैं ।

प्रणामी और निजानंदी कौन हैं ?

प्रणामी और निजानंदी एक संप्रदाय हैं जिनकी स्थापना देवचंद्र ने की थी । निजानंद शब्द 'निज + आनंद' को मिलाकर बना है, जिसका अर्थ व्यक्तिगत आनंद भी है । उन्हें प्रणामी भी कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे का अभिवादन 'प्रणाम' कहकर करते हैं ।

इनके संस्थापक देवचंद्र कौन हैं ?

देवचंद्र मेहता निजानंद संप्रदाय के संस्थापक थे, उनका जन्म 11 अक्टूबर 1581 को उमरकोट 'सिंध' में मतु मेहता और उनकी पत्नी कुँवर बाई के यहाँ हुआ था ।

देवचंद्र अपने अस्तित्व और ईश्वर के बारे में जानने के लिए हमेशा उत्सुक रहते थे । अपने प्रारंभिक वर्षों के दौरान वह 'राधा वल्लभ संप्रदाय' के भक्त थे, उनके गुरु स्वामी हरिदास ठाकुर थे, जिन्होंने उन्हें 'अखंड रास बिहारी श्री कृष्ण' मंत्र प्रदान करके संप्रदाय में दीक्षित किया था ।

ऐसा कहा जाता है कि जब वह युवा थे और रेगिस्तान से पैदल भुज की ओर यात्रा कर रहे थे, तब भगवान उनके सामने सैनिक के रूप में प्रकट हुए थे । 40 वर्ष की आयु में उन्होंने श्रीमद्भागवत सुनते समय भगवान से प्राप्त मंत्र के आधार पर नए धर्म की स्थापना की, लेकिन मंत्र की सत्यता को लेकर प्रणामियों और निजानंदियों के बीच विरोधाभास है । क्योंकि प्रणामियों का मानना है कि यह 'निजनाम श्रीकृष्णजी अनादि अक्षरातीत' है, लेकिन निजानंदियों का कहना है यह 'निजनाम श्रीजीसाहबजी अनादि अक्षरातीत' है । कौन सा मंत्र असली है ये आपको बाद में पता चलेगा, देवचंद्र ने यह मंत्र अपने शिष्य प्राणनाथ को दिया ।

आगे चलकर यही 'प्राणनाथ' निजानंद धर्म के उत्तराधिकारी बने और स्वयं की ही पूजा करवाने लगे ।

प्राणनाथ कौन है?

प्राणनाथ का जन्म 'मेहराज ठाकुर' के रूप में लोहाना राजपूत परिवार में सितंबर 1618 को जामनगर, गुजरात में धन बाई और केशव ठाकुर के घर हुआ था। 12 साल की उम्र में उन्होंने देवचंद्र को अपने गुरु के रूप में स्वीकार किया और फिर उनके पसंदीदा शिष्य और उत्तराधिकारी बन गए। ऐसा कहा जाता है कि आत्माओं को जगाने अर्थात 'जागनी' का काम उनके गुरु ने उन्हें सौंपा था, यही कारण है कि उन्होंने अरब देशों फारस ‘ईरान’, इराक, हब्सा ‘इथियोपिया’ आदि की यात्रा की। प्राणनाथ ने अपनी शिक्षाओं को 'क़ुलज़म शरीफ़ या क़ुलज़म स्वरूप' नामक पुस्तक में लिखा है।

क़ुलज़म शरीफ़ या स्वरूप क्या है?

क़ुलज़म शरीफ़ एक साथ 14 पुस्तकों का संग्रह है। यह प्रणामियों और निजानंदियों का मूल ग्रंथ है, जिसके माध्यम से प्राणनाथ श्रीमद्भागवत, वेद, कुरान, बाइबिल और तौरेत के छिपे हुए अर्थ को बताने का दावा करते हैं।

जब भी प्रणामियों में शादी की सालगिरह, जन्मदिन या प्रार्थना सभा होती है तो वे कुलज़म शरीफ़ का सामूहिक पाठ आयोजित करते हैं जिसे 'चौदह किताबों का पाठ' कहा जाता है। कभी-कभी एक ही बैठक में पूरी किताब पढ़ी जाती है, इसे 'अखंड पाठ' कहा जाता है। यहां सभी 14 पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं:

1. श्री रास - 1657 में जामनगर जेल में लिखी गई पहली रचना। यह गुजराती में है जहां प्राणनाथ ने वृंदावन में श्री कृष्ण की ब्रज और रास लीला का खुलासा किया है।

2. प्रकाश - गुजराती और हिंदुस्तानी में लिखी गई दूसरी पुस्तक है। यह विरह के विषय से संबंधित है; प्रभु से बिछुड़ी आत्माओं की व्यथा।

3. षटऋतु - जामनगर में लिखा गया था और गुजराती में है, जो भगवान के साथ अलगाव और मिलन के विषय पर चर्चा करता है ।

4. कलश - उन्होंने 1658 में लिखना शुरू किया और 1671 में पूरा किया । इस पुस्तक में उन्होंने अनावश्यक अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों का विरोध किया है । वह जागृति यानी आत्माओं के जागरण की बात करते हैं । यह गुजराती में लिखा गया है ।

5. सनंध - 1658 में रचित और हिंदवी में लिखी गई है । यहां वह विभिन्न धार्मिक शिक्षाओं के बीच समानता, इस्लाम के बारे में अधिक जानकारी है ।

6. किरंतन - 1658-1683 की अवधि में हिंदवी में लिखी गई । जिसमें संगीत और भजन शामिल हैं । यहां वह एक सच्चे हिंदू को परिभाषित करते हैं ।

7. खुलासा - 1683-1690 में पन्ना में लिखा गया । यह हिंदवी में लिखा गया है और इसमें प्राणनाथ कुरान की गहराईओं को स्पष्ट करते हैं और पुराण के साथ इसकी एकता बताते हैं ।

8. खिलवत - 1683-1690 में पन्ना में रचित । अरबी में इसका अर्थ है ‘मौन एकता’ । इसमें प्राणनाथ ने 'आत्मा' का प्रेमी 'अल्लाह' से मिलन प्रकट किया है ।

9. परिक्रमा - 1684 में पन्ना में लिखी गई । इसकी भाषा हिन्दवी है । इसमें अल्लाह के परमधाम के आनंद और सौंदर्य की चर्चा की गई है ।

10. सागर - 1687 में पन्ना में रचित, इसमें अल्लाह के पौराणिक समुद्रों का वर्णन मिलता है ।

11. सिंधी वाणी - सिंधी में लिखी गई, जो प्राणनाथ की मातृभाषा थी । इसमें वह अपनी भूमिका और इस दुनिया में आने के कारण पर चर्चा करते हैं ।

12. सिंगार - 1685 में रचित और स्थानीय भाषा हिंदवी में है । यहां राजजी के दिव्य रूप और उनके गुणों और सुंदरता की चर्चा की गई है ।

13. मार्फ़त सागर - 1691 में अरबी, फ़ारसी और हिंदवी में लिखा गया । मार्फ़त का अर्थ है संपूर्ण ज्ञान । इसमें प्राणनाथ कुरान का विश्लेषण करते हैं और उसके शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसके प्रतीकात्मक अर्थ को भी प्रकट करते हैं ।

14. कयामतनामा - 'छोटा और बड़ा' दो भागों में विभाजित । यह 1688-1689 की अवधि में पन्ना के पास चित्रकूट में लिखा गया था । भाषा अरबी, फ़ारसी और उर्दू है । ये दोनों ग्रंथ कुरान के 'क़यामत' और उसके अर्थ के बारे में बात करते हैं ।

इन सभी 14 किताबों में कुल मिलाकर 18,758 श्लोक हैं । इसके अलावा प्रणामियों की एक और किताब है 'बीतक' जो मुसलमानों की 'हदीस' की तरह ही प्राणनाथ के जीवन के बारे में बात करती है ।

क्या प्रणामी भगवान कृष्ण के भक्त हैं, क्योंकि रासलीला कृष्ण की दिव्य लीलाओं में से एक है ?

वैसे ! 'रास और प्रकाश' पुस्तकें पढ़ते समय ऐसा लग सकता है कि प्राणनाथ भगवान कृष्ण के भक्त हैं । लेकिन प्रणामी केवल 11 वर्ष और 52 दिन की आयु तक के कृष्ण की पूजा करते हैं, क्योंकि उनका मानना है केवल उस समय तक 'प्राणनाथ या राज की शक्ति' श्रीकृष्ण के अंदर काम कर रही थी । जिसके लिए प्राणनाथ कहते हैं:

एही थे ब्रज रास में, हुए पूरन नहीं मनोरथ ।
तब तीसरो ऐ रचनों पड़यो, इन दिखावन अरथ ॥ बीतक 32.9
वे 'प्राणनाथ या राज' कृष्ण की ब्रज और रास लीला में थे, लेकिन सखियों की 'माया' के खेल को देखने की इच्छा पूरी नहीं हो सकी, इसलिए उस इच्छा को पूरा करने के लिए प्राणनाथ ने तीसरी बार ब्रह्मांड की रचना की । 'माया' भगवान की आल्हादिनी शक्ति है, जिसके लिए रामायण कहती है:

ब्रह्माण्ड ब्रह्मा निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
जैसा कि वेदों में कहा गया है, भगवान राम के रोम-रोम से असंख्य ब्रह्मांड प्रकट होते हैं । प्रणामी और निजानंदी भगवान राम में विश्वास नहीं करते हैं, लेकिन भगवान की 'माया' में विश्वास करेंगे, क्योंकि वे भी प्राणनाथ की तरह भ्रमित हैं ।

यद्यपि प्राणनाथ ने कृष्ण के नाम की महिमा का उल्लेख किया है:

पर ना आवे तोले एकने, मुख श्री कृष्ण कहंत।
प्रसिद्ध प्रगट पधारी, किवता किव करन्त ॥ प्रकरण 127.1
कोई भी कर्म भगवान कृष्ण के नाम का एक बार जप करने के बराबर नहीं है ।
उन्होंने यह श्लोक महाभारत के शांति पर्व, 47.92 से लिया है:

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥
भगवान कृष्ण को एक बार 'प्रणाम' करने का फल 10 अश्वमेघ यज्ञ करने के बराबर होता है । ऐसे यज्ञ करने से पुनर्जन्म होता है, लेकिन जो लोग 'कृष्ण' को प्रणाम करते हैं उन्हें दोबारा जन्म नहीं लेना पड़ता । वैसे तो प्रणामी केवल 11 वर्ष और 52 दिनों तक के कृष्ण को मानते हैं ।

लेकिन खुद को कृष्ण भक्त दिखाने के लिए वे हिंदू धर्मग्रंथों से कृष्ण के वयस्क जीवन के श्लोक का भी उपयोग करेंगे । यह साबित करता है की वे कितने दोगले हैं, नीचे एक और चौपाई है:

जुध किया जरासिंधसों, रथ आयुध आये खिन माहें ।
तब कृष्ण विष्णु मय भये, वैकुण्ठ में विष्णु तब नाहें ॥
कलश हिंदुस्तानी 18.21

जब कृष्ण जरासंध से युद्ध कर रहे थे तो अचानक उनके हथियार और रथ प्रकट हो गये । उसी समय श्रीकृष्ण 'भगवान विष्णु' में परिवर्तित हो गए जो की वैकुंठ से गायब हो गए थे । प्राणनाथ का यह दावा मिथ्या प्रतीत होता है, क्योंकि विष्णु का अर्थ ही है जो सर्वव्यापी हो । विश्व अर्थात 'संसार' + अणु अर्थात 'परमाणु' = अतः संसार के प्रत्येक परमाणु में जो विद्यमान है उसे 'विष्णु' कहते हैं । प्राणनाथ ने बाद में शिशुपाल के बारे में भी ऐसी ही बातें कही:

बैकुंठ में जोत फिर आई, सिसुपाल किया हवन ।
मुख समानी श्रीकृष्ण के, यो कहे वेद वचन ॥
कलश हिंदुस्तानी 18.22

प्राणनाथ कहते हैं कि कृष्ण द्वारा शिशुपाल की हत्या का उल्लेख श्रीमद्भागवतम् 10.74.43 में है, ऐसा कहा गया है कि शिशुपाल की आत्मा वैकुंठ गई लेकिन वहां से पुनः लौटकर श्रीकृष्ण के हृदय में प्रवेश कर गई क्योंकि वैकुंठ में भगवान विष्णु नहीं थे । लेकिन श्रीमद्भागवतम् 10.74.45 में इसे स्पष्ट करता है:

चैद्यदेहोत्थितं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ।
पश्यतां सर्वभूतानामुल्केव भुवि खाच्च्युता ॥

शिशुपाल के शरीर से एक तेज रोशनी निकली और सभी के देखते-देखते, वह आकाश से पृथ्वी पर गिरने वाले उल्कापिंड की तरह भगवान कृष्ण में प्रवेश कर गई ।

इसलिए यह श्लोक साबित करता है कि शिशुपाल की आत्मा भगवान विष्णु के निवास वैकुंठ में गई ही नहीं बल्कि सीधे श्रीकृष्ण में विलीन हो गई, क्योंकि कृष्ण और विष्णु दो नहीं, एक ही हैं ।

क्या प्रणामी हिन्दू नहीं हैं, जबकि वे तो भगवान कृष्ण की पूजा करते हैं ?

जब आप उनके किसी मंदिर में जाएंगे तो आपको लगेगा की छवि राधा-कृष्ण की हैं, लेकिन करीब से देखने पर पता चलेगा कि वे राज-श्यामाजी की पूजा करते हैं । प्रणामी कहते हैं कि राधा-कृष्ण और राज-श्यामा एक ही हैं, लेकिन अगर यह सच है तो महाभारत में कृष्ण के नाम 'राज' का उल्लेख क्यों नहीं है, भागवत पुराण में भी, गीता में भी कहीं भी अर्जुन ने कृष्ण को 'राज' नाम से नहीं बुलाया है ।

क्योंकि ‘राज’ प्राणनाथ का ही दूसरा रुप है, जिससे वह राज नाम की आड़ में खुद की पूजा करवा सके । मैं राधा-कृष्ण और राज-श्यामा के बीच अंतर दिखाने के लिए तस्वीरें डाल रहा हूं ।




दोनों तस्वीरों को देखने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है की राज और श्रीकृष्ण एक नहीं हैं, क्योंकि राज ‘कृष्ण’ कैसे हो सकते हैं? जब उनके सिर पर न तो 'मोर पंख' है और न ही वे 'बांसुरी' बजाते हैं । कृष्ण 'पीतांबर' पहनते हैं और राज ‘सफेद वस्त्र’ पहनते हैं, 'श्यामा' वैसे श्री राधा का दूसरा नाम है, मेरा मानना है कि प्राणनाथ ने अपने भक्तों को बेवकूफ बनाने के लिए कह दिया कि श्यामा और राधा एक ही हैं । जैसे पौंड्रक और कृष्ण का एक कॉमन नाम 'वासुदेव' था इसका यह मतलब नहीं कि दोनों एक ही हैं । यहाँ एक चौपाई है, जिसमें क़ुलज़म स्वरूप में 'राधा' के बारे में उल्लेख है:

राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात ।
नान्हों कृष्ण कल्याणजी, तेथी मोटो सिदामो भ्रात ॥
कलश गुजराती 8.18

इस परिवार में राधिका, उनके पिता वृषभानु जी, माता प्रभावती बाई, छोटे भाई कृष्णा, कल्याण जी और बड़े भाई श्रीदामा हैं । यहां प्राणनाथ, श्रीकृष्ण को राधा का छोटा भाई कहते हैं, लेकिन हिंदू धर्मग्रंथों में उल्लेख है कि राधा की ‘अनंग मंजरी’ नाम की एक छोटी बहन थी और उनकी मां का नाम प्रभावती बाई नहीं कीर्तिदा था । या तो प्राणनाथ को शास्त्रों का पूरा ज्ञान नहीं था या वह एक अत्यंत चालक आदमी था जो जानता था कि उस समय के हिंदुओं को मुर्ख कैसे बनाना है । क्योंकि श्रीराधा श्रीकृष्ण का शाश्वत सम्बन्ध है, वे भाई-बहन नहीं हैं जैसा कि प्राणनाथ ने कहा है । हालांकि उन्होंने बाद में कहा कि राधा की सगाई कृष्ण से हुई थी पर उन्होंने शादी नहीं की, लेकिन ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लेख है कि ब्रह्माजी ने 'भंडरीवन' में उनका विवाह कराया था ।

अब वह चौपाई जिसमे प्राणनाथ ने 3 कृष्ण के बारे में बताया है:
क्रुष्ण क्रुष्ण सब कोई कहे, पर भेद न जाने कोए ।
नाम एक विध है सही पर रुप तीन विध होए ॥
एक भेद बैकुंठ का दूसरा है गो - लोक ।
तीसरा धाम अखंड का कहत पुराण विवेक ॥

'कृष्ण-कृष्ण' सब जपते हैं, लेकिन इसका वास्तविक अर्थ कोई नहीं जानता । नाम एक है, लेकिन रूप 3 हैं, पहला 'वैकुंठ' से विष्णु कृष्ण, दूसरा 'गोलोक' से कृष्ण और तीसरा 'परमधाम' से कृष्ण, जैसा कि पुराणों में कहा गया है । प्रणामी कृष्ण को परमधाम से मानते हैं । लेकिन यह कोरा झूठ है क्योंकि पुराणों में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि कृष्ण 3 हैं, यहां तक कि भगवद गीता में श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं:

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ 4.9

हे अर्जुन ! मेरा जन्म और लीलाएँ दिव्य हैं, जो मेरे दिव्य स्वरूप को समझ लेता है उसे शरीर छोड़ने पर जन्म नहीं लेना पड़ता, उसे मेरे परमधाम की प्राप्ति होती है । अतः 3 कृष्णों का यह कथन असत्य प्रतीत होता है, क्योंकि भगवान की हर लीला का एक कारण होता है, जो कृष्ण इस श्लोक से ठीक पहले कहते हैं:

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ 4.8

साधु पुरुषों अर्थात अपने भक्तों की रक्षा के लिए, अधर्मियों को मारने के लिए तथा धर्म की पुनः स्थापना के लिए, मैं 'कृष्ण' हर युग में इस धरती पर अवतरित होता हूं ।

एक और श्लोक जो भगवद गीता का सार है:

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ 18.66

सभी प्रकार के धर्मों को त्याग दो और केवल मेरी शरण में आ जाओ । मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्त कर दूंगा, डरो मत । लेकिन यहां 'धर्म' का मतलब हिन्दू - मुस्लिम वाला धर्म नहीं बल्कि दूसरों पर 'निर्भरता' है ।

अब प्राणनाथ का दावा है कि ये सभी श्लोक उनके या राजजी बारे में बात करते हैं, कृष्ण के बारे में नहीं । क्योंकि जब अर्जुन ने कृष्ण से गीता का संदेश दोबारा सुनाने के लिए कहा, तो कृष्ण कह नहीं सके क्योंकि उन्हें यह याद नहीं था । अपनी बात साबित करने के लिए वे महाभारत अश्वमेध पर्व 14.16.5 से यह श्लोक बताते हैं:

विदितं मे महाबाहो संग्रामे समुपस्थिते ।
माहात्म्यं देवकीमातस्तच्च ते रूपमैश्वरम् ॥
हे महाबाहु ! हे देवकीनंदन ! जब हम युद्ध के मैदान में थे, उस समय मुझे आपके परम ज्ञान एवं दिव्य स्वरूप का दर्शन हुआ था ।

यत् तद् भगवता प्रोक्तं पुरा के शव सौहृदात् ।
तत् सर्वं पुरुषव्याघ्र नष्टं मे भ्रष्टचेतसः ॥ 14.16.6
परन्तु केशव ! व्याकुलता के कारण मैं आपके द्वारा पूर्व में दिये गये दिव्य ज्ञान को भूल गया हूँ ।

मम कौतूहलं त्वस्ति तेष्वर्थेषु पुनः पुनः ।
भवांस्तु द्वारकां गन्ता नचिरादिव माधव ॥ 14.16.7
माधव ! मैं अब उन विषयों को बार-बार सुनना चाहता हूं । चूँकि आप शीघ्र ही द्वारका के लिए प्रस्थान करने वाले हैं, इसलिए कृपया मुझे पूरा विषय दोबारा सुना दीजिये ।

वैशम्पायन उवाच
एवमुक्तस्तु तं कृष्णः फाल्गुनं प्रत्यभाषत ।
परिष्वज्य महातेजा वचनं वदतां वरः ॥ 14.16.8
वैशम्पायन कहते हैं - राजन् ! अर्जुन द्वारा उन वाक्यों को कहने के बाद, सभी भगवानों में सबसे महान वक्ता 'श्रीकृष्ण' ने उसे गले लगाया और बोले ।

श्रावितस्त्वं मया गुह्यं ज्ञापितश्च सनातनम् ।
धर्मं स्वरूपिणं पार्थ सर्वलोकांश्च शाश्वतान् ॥
अबुद्ध या नाग्रहीर्यस्त्वं तन्मे सुमहदप्रियम् ।
न च साद्य पुनर्भूयः स्मृतिर्मे सम्भविष्यति ॥ 14.16.9 -10

श्रीकृष्ण कहते हैं- अर्जुन ! उस समय मैंने तुम्हें सबसे गोपनीय ज्ञान दिया था, तुम्हें अपने पुरुषोत्तम सनातन धर्म, शुक्ल-कृष्ण गति से परिचित कराया, अपने दिव्य और शाश्वत निवासों के बारे में बताया । लेकिन अज्ञानता के कारण तुम उन्हें याद नहीं रख सके, यह मुझे पसंद नहीं है । अब मुझे वो बातें पूरी तरह याद नहीं आ रही हैं ।

नूनमश्रद्दधानोऽसि दुर्मेधा ह्यसि पाण्डव ।
न च शक्यं पुनर्वक्तुमशेषेण धनंजय ॥
स हि धर्मः सुपर्याप्तो ब्रह्मणः पदवेदने ।
न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः ॥ 14.16.11 -12

कृष्ण कहते हैं - धनंजय ! अभी मैं उस 'ज्ञान' को ज्यों का त्यों नहीं दोहरा सकता ।

अर्जुन कहता है - परन्तु केशव ! व्याकुलता के कारण मैं आपके द्वारा पूर्व में दिये गये 'दिव्य ज्ञान' को भूल गया हूँ?

तब श्रीकृष्ण कहते हैं- पाण्डुपुत्र ! तुम सचमुच बहुत असावधान हो, तुम्हारा दिमाग कमजोर लगता है । मैंने तुम्हें जो ज्ञान दिया था वह धर्म अनुसार 'ब्रह्मपद' पाने के लिए पर्याप्त था, इसलिए मेरे लिए उस धर्म को पुनः दोहराना संभव नहीं है ।

परं हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया ।
इतिहासं तु वक्ष्यामि तस्मिन्नर्थे पुरातनम् ॥ 14.16.13

उस समय मैंने योगयुक्त होकर दिव्या अवस्था में तुम्हें भगवान के तत्त्व का वर्णन किया था । तो उस विषय में ज्ञान देने के लिए अब मैं तुम्हें प्राचीन इतिहास के बारे में बताऊंगा ।

यहां कृष्ण योगयुक्त के बारे में बात कर रहे हैं, क्योंकि गीता के संदेश को समझने के लिए 'योगस्थ बुद्धि' की आवश्यकता है । लेकिन प्रणामी और निजानन्दी इन श्लोकों का कुछ और ही अर्थ निकालकर कहते हैं कि कृष्ण 'गीता' इसीलिए दोहरा नहीं सके क्योंकि वह 'राजजी' थे जिन्होंने कृष्ण के शरीर के माध्यम से गीता का उपदेश दिया था । उस समय स्थिति अलग थी क्योंकि अर्जुन युद्ध लड़ने से इंकार कर रहा था, लेकिन अब स्थिति अलग है, यही कारण है कि कृष्ण वह संदेश नहीं दोहराते हैं ।

बाद में श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो संदेश दिया उसे 'अनु-गीता' नाम से जाना जाता है, और जब हम श्रीमद्भागवत में देखते हैं तो हमें वे श्लोक मिलते हैं:

वासुदेवाङ्घ्र्यनुध्यानपरिबृंहितरंहसा ।
भक्त्या निर्मथिताशेषकषायधिषणोऽर्जुनः ॥ 1.15.29
अर्जुन निरंतर भगवान कृष्ण के चरण कमलों का स्मरण करते रहे, जिससे उनकी भक्ति तेजी से बढ़ती गई, परिणामस्वरूप उनके मन का सारा मैल दूर हो गया ।

गीतं भगवता ज्ञानं यत् तत् सङ्ग्राममूर्धनि ।
कालकर्मतमोरुद्धं पुनरध्यगमत् प्रभुः ॥ 1.15.30
तब अर्जुन को युद्ध की शुरुआत में श्रीकृष्ण से प्राप्त भगवद गीता का उपदेश याद आ गया, जिसे वह समय और कर्म कर्तव्यों के निर्वहन के कारण गलती से भूल गए थे ।

तो यह साफ़ हो गया कि गीता का उपदेश श्रीकृष्ण ने दिया था जिसमें वे स्वयं की महानता के बारे में बताते हैं । फिर प्राणनाथ यह क्यों कहते हैं कि उन्होंने ही कृष्ण के शरीर से गीता कही थी? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह खुद को भगवान से सर्वोच्च सिद्ध करना चाहता है और लोगों से अपनी पूजा करवाना चाहता है ।

तीन काण्ड वेद वेदान्त के, वल्लभाचारज के मत ।
संकराचारज नें क्या कह्या, क्या कह्या गीता में इत ॥ बीतक 47.86
वेदों के तीन कांड; ज्ञान, कर्म और उपासना, वेदांत सूत्र, शंकराचार्य और वल्लभाचार्य आदि के संप्रदाय के बारे में जो कुछ भी कहा गया है और भगवद गीता का सही अर्थ केवल 'प्राणनाथ' द्वारा ही प्रकट किया जा सकता है ।

प्राणनाथ यहां शंकराचार्य के बारे में बता रहे हैं, जो प्रथम जगद्गुरु थे और उन्होंने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद और भगवद गीता का अनुवाद किया था । किसी को भी 'जगद्गुरु' बनने के लिए इन सबका अनुवाद करना ज़रूरी था, प्राणनाथ ने इनमें से किसी का भी अनुवाद नहीं किया, लेकिन शंकराचार्य पर उंगली उठाने का दुस्साहस अवश्य किया है । फिर वह आगे कहते हैं:

भागवत गीता मिने, और वेद वेदान्त ।
सास्त्र इन वास्ते हुआ, हकें करी सब कर खान्त ॥ बीतक 66.65
वेद, वेदांत, भगवद्गीता और अन्य सभी शास्त्र 'प्राणनाथ' के लिए ही रचे गए हैं । वे सभी 'प्राणनाथ' की ही महिमा गाते हैं और उसकी इच्छाएँ पूरी करते हैं ।

हम कैसे मान लें कि प्रणामी और निजानंदी कृष्ण के नहीं बल्कि राजजी और प्राणनाथ के भक्त हैं?

प्रणामी या निजनादी केवल 11 वर्ष 52 दिन की आयु तक के कृष्ण की पूजा करते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि उस आयु तक राजजी और प्राणनाथ की शक्तियाँ कृष्ण के शरीर द्वारा लीला कर रही थीं ।

श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई ।
कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई ॥ कलश हिंदुस्तानी 18.45

जब 'श्रीराज' श्रीकृष्ण के शरीर में प्रकट हुए तो पूरा ब्रज क्षेत्र प्रसन्न और उपजाऊ हो गया, यहाँ तक कि गोपियों को भी दही बेचने के लिए मथुरा जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी । कुमारिका सखियों ने भी गोपियों के साथ मिलकर लीला की ।

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार ।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार ॥ कलश हिंदुस्तानी 18.14

प्राणनाथ कहते हैं कि जिस 'कृष्ण' को वासुदेव अपने साथ गोकुल ले गए थे, उन्हें अवतार नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि वे 'परमधाम' के राजजी हैं, 'वैकुंठ' के विष्णु नहीं ।

ब्रज रास में हम थे, भी तीसरे आये इत ।
अब खेल देख पीछे फिरें, जाये लगें हम तित ॥ बीतक 33.24

प्राणनाथ कहते हैं कि उन्होंने ही 'ब्रज और रास' में कृष्ण के रूप में लीला की थी, अब वे ही जागनी ब्रह्माण्ड कलियुग में भी प्रकट हुए हैं। इस नाटक को देखने के बाद हम राजजी के परमधाम लौट जायेंगे।

इसलिए कृष्ण के शरीर में लीला करने के बाद, राजजी ने अपनी शक्तियां वापस ले लीं और जो अवतार बचा वह 'वैकुंठनाथ' विष्णु का था। तब 'तारतम ज्ञान' देने के लिए राजजी इस कलियुग में प्राणनाथ के रूप में पुनः प्रकट हुए:

तारतम लई श्री राज पधारया, थयूं ते सर्व ने जाण ।
सखियों कहे अमें आवी ने मलसूं, मलिया ते मूल एधाण ॥ किरन्तन 124.5

राजजी स्वयं तारतम की दिव्य रोशनी फैलाने के लिए पृथ्वी पर प्रकट हुए हैं जिससे हर कोई परमधाम के बारे में जान सके । हमारा शाश्वत सम्बन्ध केवल 'प्राणनाथ' से है, अन्त में हम सब उन्हीं के श्रीचरणों में मिलेंगे ।

इस श्लोक से सिद्ध होता है कि वे 'राजजी और प्राणनाथ' के भक्त हैं 'कृष्ण' के नहीं । अब मैं यह साबित करूँगा कि ‘राज’ प्राणनाथ का ही एक रूप है, जिनके माध्यम से वह स्वयं की पूजा करवाना चाहता है ।



इस सोने के सिंहासन के पीछे की आकृतियों में लेफ्ट में प्राणनाथ और राइट में उसकी पत्नी बाईजू राज हैं । प्रणामी और निजानंदी इन्हें 'राजजी और श्यामाजी' बताते हैं । तो प्रणामियों और निजानंदियों के लिए उनके 'इष्टदेव' प्राणनाथ हैं, कृष्ण नहीं, यहाँ तक कि उनका धर्मग्रंथ 'क़ुलज़म शरीफ़' भी ऐसा ही कहता है:

वेदों कह्या आवसी, बुध ईस्वरों का ईस ।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस ॥
ख़ुलासा 12.31

वेद कहते हैं कलियुग में बुद्ध निष्कलंक अवतार 'प्राणनाथ' आएंगे जो सभी देवताओं में सर्वोच्च भगवान हैं । वह कलियुग की सभी बुराइयों को हराएंगे और सभी को सभी पापों से मुक्त करेंगे ।

हिन्दू कहे धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम ।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम ॥ ख़ुलासा 13.80

हिंदू कहते हैं कि वेदों में लिखा है कि कलियुग में 'सच्चितानंद परब्रह्म' स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होंगे । ये शब्द जब सत्य हो जायेंगे तब हम सभी उनके 'दिव्य स्वरूप' को देखने के लिए एकत्रित होंगे ।

विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।
वेदों कहया आखिर जमाने, एही है सिरदार ॥ सनंध 36.46

हिंदू धर्मग्रंथों में लिखा है कि कलियुग का आरम्भ ही उसका 'अंत समय' होगा, यह ब्रह्मांड के विनाश का समय होगा । तब 'विजयाभिनंदन बुद्ध निष्कलंक' प्राणनाथ पृथ्वी पर अवतरित होंगे । क्योंकि वेदों के अनुसार वही उस समय लोगों के एकमात्र उद्धारकर्ता होंगे । प्रणामी कहते हैं कि यहाँ वेद का अर्थ है; भागवत पुराण, बौद्ध गीता, महेश्वर तंत्र, भविष्य पुराण आदि, लेकिन वेद का अर्थ है ऋग, साम, यजुर और अथर्व, कोई पुराण या अन्य ग्रंथ वेदों में शामिल नहीं है ।

प्राणनाथ को 'बुद्ध निष्कलंक अवतार' की उपाधि तब दी गई जब उन्होंने हरिद्वार में आयोजित 'शास्त्रार्थ' के दौरान अन्य संप्रदायों के सभी संतों को हरा दिया । तब सभी संतों ने प्राणनाथ को सर्वोच्च मानकर उनकी पूजा की और आरती उतारी, जिसे प्रणामियों और निजानंदियों में 'राग नवखंडो आरती' के नाम से जाना जाता है । इसका सन्दर्भ मैं बाद में दूँगा ।

वैसे प्राणनाथ बड़ा ही अहंकारी और घमंडी था, अगर लोग उसे सर्वोच्च नहीं मानते और उसका सम्मान नहीं करते थे तो वह उनसे बहस करने लगता था । और खुद को श्रेष्ठ साबित करने के लिए दूसरों के इष्ट और उनकी आस्था का अपमान भी कर देता था !

इसके अलावा प्राणनाथ दावा करता है, वह केवल हिंदुओं में ही नहीं बल्कि मुसलमानों में भी सर्वोच्च हैं, नीचे लिखी चौपाईओं से पढ़ें:

सुनियो दुनिया आखिरी, भाग बड़े हैं तुम ।
जो कबूं कानों न सुनी, सो करो दीदार खसम ॥ सनन्ध 33.1
हे अंत समय के लोगों ! आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपने श्री प्राणनाथ जी को 'परब्रह्म' रूप में देखा है, उनके बारे में आज से पहले किसी ने नहीं सुना था ।

एही अक्षरातीत हैं, एही हैं धनी धाम ।
एही महम्मद मेहंदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम ॥ बीतक 68.72
प्राणनाथ 'पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत' हैं । उन्हें 'अखरुल इमाम महदी साहिब जुमा' के नाम से जाना जाता है, यीशु और रुह अल्लाह भी उनमें रहते हैं । वह सर्वोच्च हैं और सभी की इच्छाओं को पूरा करते हैं ।

मुक्त दई त्रैगुन फरिस्ते, जगाए नूर अछर ।
रुहें ब्रह्मसृष्ट जागते, सुख पायो सचराचर ॥ ख़ुलासा 13.112
परब्रह्म प्राणनाथ त्रिगुण अर्थातः 'ब्रह्मा, विष्णु, शिव' और इस ब्रह्मांड के सभी नश्वर प्राणियों को मुक्ति देंगे ।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेदी पाक पूरन ।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन ॥
सनन्ध 42.16
'इमाम मेंहदी' प्राणनाथ के अतिरिक्त किसी भी मनुष्य को शुद्ध, पूर्ण व दिव्य नहीं कहा जा सकता । वह 36,000 दिव्य आत्माओं के साथ 'जागनी और रास' लीला करेंगे ।

कुरान तफसीर जो हुसेनी, बुजरक एह पेड़से केहेनी ।
मरद तीनों पर है मुद्दार, जो कलाम अल्ला कहे सिरदार ॥
बड़ा कयामतनामा 12.1

'तफ़सीर-ए-हुसैनी' को कुरान का सबसे अच्छा अनुवाद माना जाता है, क्योंकि इसमें कुरान की 'बसरी, मलकी और हकी' आत्माओं का वास्तविक अर्थ बताया गया है । कयामत के वक्त ये तीन रूप सबसे अहम होते हैं ।

खास उमतसों कहियो जाई, उठो मोमिनों कयामत आई।
केहेती हों माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥ बड़ा क़यामतनामा 1.1

छत्रसाल ‘सकुण्डल’ ! तुम सबसे जाकर कह दो: हे मोमिनों ! अब कियामत आ गयी है, इसलिए इल्म-ए लदुन्नी 'तारतम ज्ञान' के प्रकाश में जागृत हो जाओ । मेरे द्वारा तुमसे जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह पूरी तरह कुरान के अनुकूल है ।

इस चौपाई क़यामत अर्थात जब अंत में अल्लाह सभी का हिसाब करेंगे और काफिरों को 'दोज़ख' की आग में जलाएंगे उस बारे में बता रही है । लेकिन निजानन्दी इसका अर्थ 'आत्मा की जागनी' बताते हैं ।

यदि प्राणनाथ इतने महान थे तो उनके स्वरूप के बारे में हिन्दू धर्मग्रंथों में भी श्लोक अवश्य लिखे होंगे?

हाँ नीचे कुछ श्लोक हैं:

सुन्दरी च इन्दिरा नामाभ्यां चन्द्रसूर्ययोः ।
मायान्धकार विनाशाय भविष्यतः कलौयुगे ॥

माया के अंधेरे को मिटाने के लिए परमधाम से दो दिव्य आत्माएं सुंदरबाई 'श्यामा' और इंदिरा 'इंद्रावती' दो शरीरों में प्रकट होंगी, उनका काम सूर्य और चंद्रमा की तरह रोशन होगा । उन्हें देवचंद्र और प्राणनाथ के नाम से भी जाना जाएगा ।

अक्षरारीत एषो वै पुरुषो बुद्ध उच्यते ।
तेजोमयादिरूपश्च तस्यावतार उच्यते ॥ बुद्ध गीता

'विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक' प्राणनाथ ही उत्तमपुरुष 'अक्षरातीत' के रुप में प्रकट हुए थे । प्राणनाथ किसी मानव शरीर का नाम नहीं है, बल्कि 'सच्चिदानंद परब्रह्म' को ही प्राणनाथ कहा जाता है ।

निजानंदियों का मानना है कि भविष्य पुराण के अध्याय 72 में लिखा है:

विक्रमस्य गतेऽब्दे सप्तदशाष्टत्रिंश यदा ।
तदायं सच्चिदानंदो हि अक्षरात्परतः परः ॥
भारते च इन्दिरायां स बुद्ध आविर्भविष्यति ।
स बुद्ध कल्किरुपेण क्षात्रधर्मेण तत्परः ।
चित्रकूटे वने रम्ये विजायाभिनन्दनो भवेत् ॥

विक्रम संवत 1738 में परमधाम से 'श्री इंद्रावती' की आत्मा सच्चिदानंद परब्रह्म 'विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक' अवतार के रुप में पन्ना के चित्रकूट के सुंदर वन में प्रकट होंगी । एक अन्य श्लोक 'सुंदरी तंत्र' से है:

पद्मावती केन शरदे विन्ध्यपृष्ठे विराजिता ।
इन्दिरा नाम सा देवी भविष्यति कलौ युगे ॥

विंध्याचल में 'केन और किलकिला' नदी के बीच स्थित पद्मावती में इंद्रावती 'परब्रह्म' के रुप में लीला करेंगी ।

रामायण के बालकाण्ड का एक श्लोक:

नेति नेति जेहि वेद निरुप, निजानंद निरुपाधि अनूपा ।
शंभु विरंचि विष्णु भगवाना, उपजहिं जासु अंश ते नाना ॥ 144.3

वेद जिसका वर्णन 'नेति-नेति' कहकर नहीं कर सकते । जो आनंदमय, उपाधिरहित, अद्वितीय और अनंत है, जिनके शरीर के रोम-रोम से अनंत शिव, ब्रह्मा और विष्णु प्रकट होते हैं । इस श्लोक में तुलसीदासजी 'श्रीराम' के बारे में बता रहे हैं लेकिन निजानंदियों ने इसमें भी 'प्राणनाथ' को घुसा दिया है ।

अब भगवद गीता के कुछ श्लोक:

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥ 15.17

इनके अतिरिक्त परम पुरुष है, जो अविनाशी परमात्मा है । वह तीनों लोकों के अपरिवर्तनीय नियंत्रक के रूप में प्रवेश करता है और सभी जीवित प्राणियों का समर्थन करता है ।

निजानंदियों के अनुसार वह 'अविनाशी परमात्मा' प्राणनाथ है, लेकिन आगे कृष्ण विस्तार से बताते हैं:

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ 15.18

कृष्ण कहते हैं - मैं ही वह उत्तम पुरुष 'अविनाशी परमात्मा' हूँ तथा इस नाशवान संसार से परे हूं, और यहां तक कि अविनाशी आत्मा से भी परे हूं, इसलिए वेदों और स्मृतियों द्वारा मुझे ही 'पुरुषोत्तम' रूप में जाना जाता है ।

अब देवी भागवत 4.19.2 से एक श्लोक**:**

अहं ब्रम्हा अहं विष्णुः शिवोहमिति मोहिता ।
न जानिमो वयं धातः परं वस्तु सनातनम् ॥

मैं ब्रह्मा हूं, मैं ही विष्णु हूं और मैं ही शिव भी हूं, इस प्रकार हम भगवान की माया से बंधे हैं । अतः वे उस दिव्य एवं शाश्वत परब्रह्म को नहीं जानते ।

यं ब्रम्ह्मावरुणेन्द्र रुद्र मरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः ।
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः ॥
ध्यानावस्थित तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो ।
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः ॥
जिस 'सच्चिदानंद परब्रह्म' की स्तुति ब्रह्मा, वरुण, रुद्र, इंद्र, वायु आदि देवता करते हैं, जिसकी महिमा ‘सामवेद’ के गायक गाते हैं, योगी ध्यान में जिसका साक्षात्कार करते हैं, जिसका अंत न तो देवता जानते हैं और न ही असुर, मैं उस 'अक्षरातीत सच्चिदानंद परब्रह्म' को नमस्कार करता हूं ।

पुराणसंहिता में भी ऐसा ही श्लोक आता है:
कलिः धन्यः कलिः धन्यः कलिः धन्यः महेश्वरः ।
यत्र ब्रम्ह्माप्रियाणाम् च वासना समुपाविशन् ॥
यह 28वाँ कलियुग धन्य है, जहाँ परब्रह्म श्री प्राणनाथ अपनी ब्रह्मात्माओं सहित प्रकट हुए हैं । अतः सभी से अनुरोध है कि 'श्री प्राणनाथ' को पूर्णब्रह्म के रूप में स्वीकार करें और स्वयं को धन्य करें ।

आप देख सकते हैं कि सभी धर्मग्रंथ एक ही परमेश्वर की ओर इशारा कर रहे हैं, रामायण भी ‘प्राणनाथ’ की महिमा गाती है, क्योंकि प्राणनाथ ने ही श्रीराम के भी तन से लीला करि थी ।

लेकिन जब मैंने अपना शोध किया, तो 'गीता, रामायण और देवी भागवत पुराण' के अलावा मुझे 'प्रणामियों और निजानंदियों' द्वारा बताये गए संदर्भ का कोई श्लोक नहीं मिला । “पुराण संहिता, सुंदरी तंत्र, महेश्वर तंत्र और बुद्ध गीता” नाम से कोई भी श्लोक या धर्मग्रंथ नहीं मिला ।

अंततः यदि प्राणनाथ की महिमा हिंदू धर्मग्रंथों में गाई गई है तो उन्हें इस्लाम अपनाने की क्या आवश्यकता थी ? उन्होंने इस्लाम का महिमामंडन क्यों किया? उन्होंने अल्लाह और पैगंबर मुहम्मद का गुणगान क्यों किया? उन्होंने खुद को इमाम मेहंदी क्यों कहा?

ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रणामी हिंदू नहीं बल्कि 'शिया मुसलमान' हैं जो 'निज़ारी इस्माइली' इमाम शाही परंपरा से हैं । 'कृष्ण लीला' का गुणगान वे अपना असली चेहरा छुपाने के लिए करते हैं ।

प्रणामी और निजानंदी 'मुसलमान' किस प्रकार हैं?

प्रणामी मुसलमान हैं क्योंकि प्राणनाथ ऐसा होने का दावा करते हैं । कुलज़म शरीफ में वह खुद को 'इमाम मेहंदी' कहते हैं और उन्होंने मुहम्मद, अल्लाह और विभिन्न इस्लामी शख्सियतों की बहुत महिमा गाई है ।

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेंहेदी पाक पूरन ।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन ॥ सनन्ध 42.16

'इमाम मेंहदी' प्राणनाथ के अतिरिक्त किसी भी मनुष्य को शुद्ध, पूर्ण, दिव्य नहीं कहा जा सकता । वह 36,000 दिव्य आत्माओं के साथ जागनी और रास लीला करेंगे । प्राणनाथ खुद को इमाम मेहंदी कहते हैं क्योंकि उन्होंने 'हब्सा' या मेड़ता की एक मस्जिद में 'अजान' सुनकर इस्लाम कबूल कर लिया था ।

इतहीं सिजदा बंदगी , इतहीं जारत जगात ।
इतहीं जिकर हक दोस्ती , इतहीं रोजा खोलात ॥ सिनगार 2.46

आत्माओं का लक्ष्य अखरुल इमाम मेहंदी 'प्राणनाथ' के सामने सजदा करना और उन्हें भक्ति से संतुष्ट करना है । हमें उनके मार्गदर्शन में ज़ियारत; तीर्थयात्रा करनी चाहिए, ज़कात; दान देना चाहिए, ज़िकर**;** कुरान सुने और रोजा रखकर खुद को शुद्ध करें ।

तारीफ महंमद मेहेंदी की , ऐसी सुनी न कोई क्यांहे ।
कई हुए कई होएसी , पर किन ब्रह्माण्डों नाहें ॥ सनन्ध 30.43

मुहम्मद मेंहदी 'प्राणनाथ' की महिमा पहले कभी नहीं सुनी गई है । 'प्राणनाथ' के अलावा किसी को भी परमात्मा या अल्लाह कहलाने का अधिकार नहीं है । अनन्त ब्रह्माण्ड प्रकट हो चुके हैं और भविष्य में भी प्रकट होंगे परन्तु भविष्य के किसी भी ब्रह्माण्ड में 'प्राणनाथ' के समान कोई नहीं होगा ।

मूसा इबराहीम इस्माईल , जिकरिया एहिया सलेमान ।
दाऊदें मांग्या मेहेंदी जमाना , उस बखत उठाइयो सुभान ॥
सिनगार 1.36

हज़रत, मूसा, इब्राहिम, इस्माइल, ज़िकारिया, याहोवा, सुलेमान और दाऊद आदि ने खुदा 'अल्लाह' से प्रार्थना की कि उन्हें इमाम मेहंदी 'प्राणनाथ' के समय में जन्म मिले ताकि वे दिव्य ज्ञान से जाग्रत हो सकें ।

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी ।
मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी ॥ ख़ुलासा 2.78

उनका कहना है कि जब मसी 'देवचंद्र' और इमाम 'प्राणनाथ' मिलेंगे और दिव्य चर्चा करेंगे । तब नूरजमाल या अल्लाह की महानता दुनिया के सामने आ जायेगी ।

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर ।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान ॥
बड़ा क़यामतनामा 4.1

कुरान अल-ए-इमरान के अध्याय 'तफसीर-ए-हुसैनी' के तीसरे सिपारे में इमाम मिस्त्री और 'महमूद गजनवी' के बीच मुलाकात के खूबसूरत पल का वर्णन है, इनके मिलन से हर कोई खुश था ।

लागन हिंदु मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान ।
ढ़ाए हिंदुओं के खाने बुत, दिल में इमाम की ज्यारत ॥
बड़ा कयामतनामा 4.2
सुल्तान महमूद गजनवी हिंदुओं से इतनी नफरत करता था कि उसके समय में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच युद्ध हुआ था । उसने अपने दिल में इमाम मिस्त्री के आशीर्वाद से कई हिंदू मंदिर और उनकी मूर्तियों को नष्ट कर दिया ।

यहां प्राणनाथ 'गजनवी' का महिमामंडन करते हुए उसे महान बता रहे हैं, जिसने भारत पर कई बार हमला किया और धन लूटा, सबसे प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर है जिस पर उसने 16 बार हमला किया । उसने 'गाजी' उपनाम पाने के लिए कांगड़ा, मथुरा और ज्वालामुखी पर भी हमला किया, लेकिन प्राणनाथ उसका महिमामंडन कर रहा है ।

महंमद कहे मैं उनसे, मोमिन मेरे भाई ।
कुरान हदीसों बीच में, है उनों की बड़ाई ॥ ख़ुलासा 10.70
पैगंबर मुहम्मद कहते हैं कि सभी मोमिन 'अल्लाह के उपासक' मेरे भाई हैं । कुरान और हदीसों में उनकी ही बड़ाई की गई है ।

कहे कुरान डूबे काफर, नूह नबी तोफान ।
मोमिन सबे किस्ती चढ़े, ए नई हुई जहान ॥ ख़ुलासा 13.18
कुरान कहता है कि नूह नबी में आए तूफान में सभी काफिर 'अल्लाह को नकारने वाले' डूब गए । सभी मोमीन 'अल्लाह के उपासक' नाव पर चढ़ गए और सुरक्षित किनारे पर पहुंच गए ।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रुह अल्ला मिसल गाजियो, मोमिन उतरे तब ॥ किरन्तन 108.9

जब रसूल मुहम्मद की मृत्यु के बाद 990 वर्ष और 9 महीने बीत जायेंगे तब रुहल्लाह 'श्यामा' गाजी और मोमिन के साथ इस दुनिया में प्रकट होंगी ।

मता मोमिन का काफर, ले न सके क्योंए कर ।
दिल मोमिन का अर्स कह्या, दिल काफर अबलीस घर ॥ किरन्तन 118.4
काफिर 'अल्लाह को नकारने वाले' कुरान का अर्थ नहीं समझ सकते । क्योंकि मोमिनों 'अल्लाह के उपासकों' के दिल में रोशनी होती है लेकिन काफिर का दिल इबलीस 'शैतान' का स्थान होता है ।

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग ।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग ॥ किरन्तन 90.9
कुर्बानी के बारे में सुनकर 'मोमिन' उत्साहित हो गए, जो मोमिन पीछे रह गए थे वे भी उनका साथ देने के लिए आगे दौड़ पड़े ।

दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक ।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक ॥ ख़ुलासा 1.38
सांसारिक प्राणियों के दिल पर 'इबलीस या शैतान' का शासन होता है, और मोमिन के दिल पर 'हक़ या अल्लाह' का शासन होता है । संसार के प्राणी कुरान के आदेशों का पालन नहीं करते क्योंकि उनके पास बुद्धि नहीं है ।

मोमिन गुसल हौज कौसर, माहें ईसा मेंहेदी महंमद ।
पकड़ें एक वाहेदत को, और करें सब रद ॥ ख़ुलासा 1.80
सभी मोमिन 'हौज़ कौसर' में स्नान करेंगे और यीशु, इमाम मेहंदी और पैगंबर मुहम्मद से आशीर्वाद लेंगे । इसलिए मोमिनों को बस यही सुनना चाहिए और बाकी सब को नजरअंदाज कर देना चाहिए ।

कुरान में हौज़ ए कौसर 'जन्नत' की एक नदी है जिसका पानी दूध से अधिक सफेद और शहद से अधिक मीठा है जैसा कि पैगंबर मुहम्मद ने बताया है ।

रसूल कहे मैं आखिरी, मेरे पीछे न आवे कोए ।
कह्या रुह अल्ला की आवसी, और मेंहेदी इमाम सोए ॥
किरन्तन 108.6

मुहम्मद कहते हैं कि मैं आखिरी पैगंबर हूं, मेरे बाद कोई नहीं आएगा । अख्तरुल इमाम मुहम्मद मेहंदी 'प्राणनाथ' के साथ केवल रुहल्लाह 'श्यामा' आएंगी । यह श्लोक सीधे तौर पर कहता है कि प्राणनाथ एक 'मुस्लिम' थे जो गुप्त तरीके से इस्लाम का प्रचार कर रहे थे ।

जो बात कही महम्मद नें, सोई रुह अल्लाह कलाम ।
मिला दिखाये दोनों इनों को, ए हुआ दीन एक इसलाम ॥ बीतक 39.3.93

रुहल्लाह 'देवचंद्र' और पैगम्बर मुहम्मद दोनों ने एक जैसी बातें कही थीं । 'प्राणनाथ' ने दोनों को एक में मिला दिया इसलिए अब इसे 'दीन-ए-इस्लाम' कहा जाता है ।

तोफतल कलाम जो है किताब, ए लिख्या तिस बीच आठमें बाब ।
उमतें सब पैगंमरों की मिली, सब दिलों आग दोजख की जली ॥
बड़ा कयामतनामा 7.34

किताब तोहफतुल कलाम के आठवें अध्याय में लिखा है कि कयामत के समय जब इमाम मेहंदी प्रकट होंगे तो वे सभी पैगम्बरों से मिलेंगे जिनके दिल 'नरक की आग' की तरह जल रहे थे, और उन्हें बताएँगे कि अखंड शांति कैसे प्राप्त की जाए ।

देखाई राह तौरेत कुरान, कुफर सबोंका दिया भान ।
ल्याया नहीं जो आकीन, सो जल दोजख आए मिने दीन ॥

तौरेत और क़ुरान हर किसी को यहां तक कि 'काफ़िरों' को भी सही रास्ता दिखाते हैं, लेकिन फिर भी अगर वे ईमान नहीं लाए तो ‘दोज़ख की आग’ में जल जाएंगे ।

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान ।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन ॥ सनन्ध 26.1
अब मैं आपको 'दोज़ख' के बारे में बताऊंगा लेकिन वे लोग जिन्हें अल्लाह पर विश्वास नहीं है वे दोज़ख में जलेंगे । ये रसूल ‘पैगंबर मुहम्मद’ के शब्द हैं जिन्हें हर किसी को अपने दिल में रखना चाहिए ।

काफर मुस्लिम मोमिन की, सोई करसी पेहेचान ।
हकीकत मारफत के, खोलसी द्वार कुरान ॥ सनन्ध 19.10
जब प्राणनाथ आएंगे तो वह सभी ‘काफिरों और मोमिनों’ को पहचानेंगे और कुरान की हकीकत और मारफत के रहस्य खोलेंगे ।

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान ।
याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ ॥
प्रकाश हिंदुस्तानी 37.102
चाहे कुरान हो या पुराण यह दोनों केवल एक कागज़ का टुकड़ा ही रहेंगे जब तक 'प्राणनाथ' आकर इनका असली अर्थ नहीं समझाते ।

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ ॥
खुलासा 11.4
जितने भी शास्त्र हैं वे सभी ‘अर्थ का अनर्थ’ ही करते हैं, क्यूंकि एक इमाम मेहंदी के बिना इनका असली अर्थ बताने में कोई भी समर्थ नहीं है ।

ये क़ुलज़म शरीफ़ के इस्लामी पहलुओं की एक झलक मात्र हैं । प्रणामियों की एक प्रार्थना है जिसे 'मेहर सागर' कहा जाता है, जिसमें पैगम्बर मुहम्मद का नाम तो है, लेकिन इसमें 'कृष्ण' का नाम नहीं है । इसकी कुछ चौपाइयां नीचे हैं:

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥
अल्लाह की कृपा से 'रसूल' पैगंबर मुहम्मद उनका संदेश लेकर आये । यह ज्ञान सारे अंधकार को दूर कर हमें अल्लाह की आत्मा का बोध कराता है ।

दै मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत ॥
इमाम मुहम्मद मेहंदी 'प्राणनाथ' को वह ज्ञान प्राप्त हुआ जिससे पैगंबर के तीन पहलुओं का पता चलता है । उनकी कृपा से मुझे शक्ति मिली जिसके माध्यम से मैं सत्य को उजागर करने में सक्षम हुआ हूँ ।

महामत कहे ऐ मोमिनो, ए मेहेर बडा सागर ।
सो मेहेर हक कदमों तले, पीओ अमीरस हक नजर ॥
महामति प्राणनाथ कहते हैं - हे मोमिनों ! अल्लाह की 'कृपा' सागर के समान है । अब हमें उनके चरणों में झुकना चाहिए और दिव्य अमृत का स्वाद लेना चाहिए ।

प्रणामी इस प्रार्थना को संध्या के समय गाते हैं, बिना इस बात को जाने कि यह इस्लाम और पैगंबर मुहम्मद का महिमामंडन करती है । यही नहीं 'महामति' शब्द भी महामत से लिया गया है, जो पैगम्बर मुहम्मद का ही अन्य नाम है । 'मोमिन' का अर्थ है जो सिर्फ अल्लाह में मानता हो । लेकिन प्रणामी और निजानन्दी 'मोमिन' का अर्थ सुन्दरसाथ बताते हैं ।

यदि वे मुसलमान हैं तो प्राणनाथ ने अवश्य बताया होगा कि उन्होंने कब और कहाँ इस्लाम स्वीकार किया था ?

हाँ ! प्राणनाथ ने यह उल्लेख किया है कि उन्होंने इस्लाम कब अपनाया था:

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम ।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम ॥
ख़ुलासा 15.23

मुहम्मद, ईसा मसीह, असराफील, इमाम और जिब्राइल की शक्तियों ने प्राणनाथ को आशीर्वाद दिया जिससे उन्हें **कलमा; ला इलाहा इलल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह** का वास्तविक अर्थ समझ आ गया ।

बैठे प्रबोधपुरी मिने, जाय हब्सा लिखा इत ।
तहां विचार करने लगे, थे इसलाम काम पर तित ॥
बीतक 17.43

जब प्राणनाथ प्रबोधपुरी अर्थात 'हब्सा की जेल' में कैद थे, उसे समय उन्होंने विचार किया की कैसे 'इस्लाम' पर काम करना है ।

इसलिए जब प्राणनाथ हब्सा 'इथियोपिया' में थे, तो उन्होंने एक मस्जिद के बाहर 'अज़ान' सुनी, फिर उन्होंने धर्म परिवर्तन करने का फैसला किया । इसमें विरोधाभास है क्योंकि कुछ लोग मानते हैं कि उन्होंने 'मेड़ता' में इस्लाम अपनाया था, लेकिन यह श्लोक 'इथियोपिया' को सच साबित करता है, क्योंकि इथियोपिया पहले 'हब्सा' नाम से बहुसंख्यक शिया मुस्लिम आबादी वाला देश था ।

'बीतक' में यह भी उल्लेख है कि प्राणनाथ मिडिल-ईस्ट यात्रा के दौरान मस्कट, हब्सा, फारस आदि देश गए थे । 'फारस' आज का 'ईरान' एक शिया मुस्लिम देश है ।

प्राणनाथ का धर्म क्या कहलाता था?

वैसे क़ुलज़म शरीफ़ में 'निजानंद संप्रदाय' का ज़िक्र तो है, लेकिन मुझे बहुत ढूंढ़ने पर भी 'प्रणामी' शब्द नहीं मिला ।

दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास ।
निजानन्द है सम्प्रदा, ए उत्तर प्रस्न प्रकास ॥
बीतक 37.83

दिव्य ब्रह्मपुर श्री अक्षरातीत, राजजी या प्राणनाथ का दिव्य निवास है । सम्प्रदाय का नाम 'निजानन्द' है ।

धनी श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा ऐह ।
तिनथें हम यह लखी हैं, हम द्वार पावें अब तेह ॥
बीतक 37.84

निजानन्द संप्रदाय की स्थापना धनी देवचंद्र जी ने की थी, उन्हीं से हमें यह ज्ञान मिला जो हमें मोक्ष के द्वार तक ले जाएगा ।

इन दोनों के अलावा मुझे 'निजानन्द' से सम्बंधित कोई श्लोक नहीं मिला । लेकिन इस सम्प्रदाय का वास्तविक नाम 'दीन इस्लाम या दीन ए इस्लाम' है जैसा कि कुलज़म शरीफ़ में वर्णित है ।

पहिले दीन इस्लाम में, गांग जी भाई धरे कदम ।
सेवा करी श्री देवचन्द्र जी की, कदमों सौंपी आतम ॥
बीतक 11.1

'दीन इस्लाम' कबूल करने वाले पहले व्यक्ति गांगजी भाई थे । उन्होंने श्री देवचन्द्र की सेवा की और अपनी आत्मा उनके चरणों में अर्पित कर दी ।

भवजल मोह सागर, पार न आवे कोय ।
वास्ते दीन इस्लाम के, नजरों आया सोय ॥
बीतक 9.3
इस भौतिक संसार को पार करना बहुत कठिन है, लेकिन जो लोग 'दीन इस्लाम' की शरण में आए, उन्होंने समझ लिया कि इस बाधा को कैसे पार करना है ।

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर ।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर ॥
ख़ुलासा 10.75
इस्लाम के अन्य सभी फ़िरके 'संप्रदाय' अल्लाह के लिए कुफ्र 'काफिर' हैं, लेकिन जिनका दिल साफ है, केवल ही दीन इस्लाम को अपनाएंगे ।

अब कहूं साथ उदयपुर का, जिन सौंपी आतम ।
आए दीन इसलाम में, सिर चढ़ाया हुकम ॥
बीतक 50.30
अब मैं उनके बारे में बताऊंगा जिन्होंने उदयपुर में मेरा हुकुम मानकर अपनी आत्मा मुझे सौंप दी और 'दीन इस्लाम' अपना लिया ।

अदित पुरान भागवत में, जैसा लिखा कलाम ।
तिन ऊपर तुम चलो, बीच दीन इसलाम ॥
बीतक 47.87
आदित्य पुराण और श्रीमद्भागवत ग्रंथों में जो लिखा गया है, तुम भी उसी राह पर चलो यही दीन इस्लाम का मार्ग है ।
यह बात मुझे समझ नहीं आयी की पुराण और भागवत को पढ़ना 'दीन इस्लाम' का मार्ग कैसे हो सकता है, क्यूंकि यह दोनों ग्रन्थ तो हिन्दुओं के हैं !

याद करो निजधाम को, चलो राह इसलाम पर ॥
बीतक 20.6
याद करो निजधाम 'परमधाम या दरगाह' को और उसी सच्चे मार्ग अर्थात 'इस्लाम' पर चलो ।
यानी पहले इस संप्रदाय का नाम 'निजानंद' था लेकिन प्राणनाथ ने एकछत्र अधिकार मिलते ही नाम बदलकर 'दीन इस्लाम' कर दिया ।

गहन अध्ययन करने के बाद भी मुझे क़ुलज़म शरीफ़ में 'प्रणामी' शब्द नहीं मिला । इसे बाद में जोड़ा गया है क्योंकि वे एक-दूसरे से मिलते समय 'प्रणाम' कहते हैं और भारत की आजादी के बाद खुद को कृष्ण भक्त दिखाने के लिए 'श्री कृष्ण' का नाम भी जोड़ दिया । इसके बारे में विस्तार से बाद में जानेंगे ।

इससे यही साबित होता है कि 'प्रणामी / निजानंदी' वास्तव में मुसलमान हैं, जो समाज में सम्मान से जीने के लिए अपनी असली पहचान छुपा रहे हैं ।

प्राणनाथ मुसलमान थे तो उन्होंने अवश्य ही हिन्दू भगवानों का अपमान किया होगा?
हाँ प्राणनाथ ने हिंदू देवताओं का बहुत अनादर किया है, क़ुलज़म स्वरूप के बहुत से श्लोक हैं जो इसकी पुष्टि करते हैं:

कोई कहे ओ सदा सिव, और न कोई देव ।
कोई कहे आद नारायन, करत कमला जाकी सेव ॥
किरन्तन 28.8
कुछ लोग कहते हैं कि भगवान सदाशिव सर्वोच्च हैं, उनके अलावा कोई भगवान नहीं है । कुछ कहते हैं कि भगवान आदि नारायण सर्वोच्च हैं, जिनकी सेवा महालक्ष्मी करती हैं ।

कोई कहे आदे आद माता, और न कोई क्यांहें ।
सिव नारायन सबे याथें, या बिन कछुए नाहें ॥
किरन्तन 28.9

कुछ लोग कहते हैं कि आदि पराशक्ति सर्वोच्च हैं, उनसे ऊपर कोई नहीं है । वे ही शिव, विष्णु और ब्रह्मा के जन्म का कारण हैं । उनके बिना किसी का भी अस्तित्व रह नहीं सकता ।

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार ।
कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार ॥
कलश हिंदुस्तानी 15.14

कुछ कहते हैं 'आकार' वाला ईश्वर सर्वोच्च है, कुछ कहते हैं 'निराकार' ईश्वर सर्वोच्च है । कुछ लोग 'दिव्य प्रकाश' को सर्वोच्च मानते हैं । सब में विकार अर्थात 'कमियां' हैं इसलिए हमेशा आपस में लड़ते रहते हैं ।

विष्णु अजाजील फरिस्ता, ब्रह्मा मैकाईल ।
जबराईल जोस धनीय का, रुद्र तामस अजराईल ॥
ख़ुलासा 12.45

विष्णु 'अज़ाज़िल' हैं, ब्रह्मा 'मिखाइल' हैं, 'जिब्राइल' अल्लाह की शक्ति हैं और तामसिक रुद्र 'अज़रेल' हैं । इस्लाम में अज़ाज़िल का मतलब 'शैतान' है, जो अल्लाह के सिंहासन के सबसे करीब था, लेकिन उसने घमंड के कारण पाप किया इसलिए शैतान बन गया । उन्हें 'इबलीस' नाम से भी बुलाया जाता है । रुद्र या भगवान शिव को 'अजरेल' कहा जाता है जो मृत्यु के देवता हैं ।

अब प्राणनाथ भगवान विष्णु का अपमान करेगा !

दम अबलीस अजाजील को, जाए कुराने कही लानत ।
सो बैठ दुनी के दिल पर, चलावे सरीयत ॥
ख़ुलासा 12.48

इबलीस 'अज़ाज़िल' में बैठी हुई आत्मा है, जिसे कुरान में 'शाप' दिया गया है । जो सांसारिक प्राणियों की आत्मा को नियंत्रित करता है और उन्हें 'शरीयत' का पालन करवा के अल्लाह के मार्ग से विचलित करता है ।

अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक ।
सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक ॥ ख़ुलासा 15.9

अज़ाज़िल 'महाविष्णु' पूरे ब्रह्मांड का सर्वोच्च देवदूत है । वह हर प्राणी को नियंत्रित करने वाला है, उसने 'अल्लाह' के नाम पर पृथ्वी पर झुक कर 'सजदा' किया ।

कही लानत अजाजील को, सो लगी सब दुनियां को ।
एती फरिस्ते की पाक बंदगी, क्यों दुनी मारी जाए इनसों ॥
मारफत सागर 5.48

अज़ाज़िल को 'शाप' दिया गया था, क्योंकि उसके कारण पूरी पृथ्वी को कष्ट सहना पड़ा था । 'फ़रिश्ते' शुद्ध हृदय से अल्लाह की आराधना करते थे । परन्तु अज़ाज़िल की गलतियों का दंड संसार के प्राणी क्यों भुगतें ?

इनकी औलाद की मारों राह, सबके दिल पर होऊं पातसाह ।
आदम अजाजीलसों ऐसी भई, आठमें सिपारे में जाहेर कही ॥
बड़ा कयामतनामा 1.17

अज़ाज़िल 'विष्णु' और एडम, अल्लाह से कहते हैं कि उन्हें सभी प्राणियों के स्वामित्व का अधिकार चाहिए, ताकि वे मानव जाति को ईश्वर के मार्ग से भटका सकें । इन सभी का उल्लेख कुरान के 'आठवें सिपारे' में स्पष्ट रुप से किया गया है ।

तब तो दरवाजा मूंद के गया, पीछे तो नफा काहू को न भया ।
सब जले जल्या अजाजील, जाए उठाया असराफील ॥
बड़ा कयामतनामा 24.5

इसराफिल पवित्र चट्टान से तुरही फूंककर आत्माओं को बताएगा कि 'कयामत' आ गई है, अब अल्लाह न्याय करेगा । अब किसी को भी पश्चाताप करने का समय नहीं दिया जाएगा और सभी लोग अज़ाज़िल 'विष्णु' के साथ दोज़ख में जलेंगे ।

फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील ।
पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील ॥
मारफत सागर 5.39

अज़ाज़िल सभी फरिश्तों का 'सरदार' है और इबलीस उसका वकील या शक्ति है । जिसने बिना देर किये सबके मन में अज्ञान भर दिया है ।

अजाजील काना तो रानियां, जो बातून नजर करी रद ।
देख्या उपली आंखसों, आदम वजूद गलद ॥
मारफत सागर 8.22

एक आँख वाले अज़ाज़िल को श्राप मिला क्योंकि उसने अपनी आंतरिक दृष्टि खो दी थी और अपनी बाहरी आँखों से एडम के भौतिक शरीर को देखा था ।

ना पेहेचानें आपको, ना पेहेचानें हादी हक ।
ना देखें अजाजील दिल पर, जो डालसी बीच दोजक ॥
सनन्ध 24.26

संसार के लोग ना तो उनके वास्तविक स्वरूप के बारे में जानते हैं और न ही परमधाम में विराजमान 'हादी प्राणनाथ' के बारे में कुछ जानते हैं । वे यह भी नहीं जानते कि अज़ाज़िल उनकी आत्मा का मालिक है, जो उन्हें 'दोज़ख' की आग में ले जाएगा ।

यामें अजाजील रूह असलू, दूजी रूह कुफरान ।
तीसरा दम देखन का, ना कछूए हैवान ॥
सनन्ध 24.70
जैसा कि प्राणनाथ ने बताया कि 'अज़ाज़िल' नारायण हैं और जो लोग उन्हें मानते हैं वे 'काफ़िर' हैं । तीसरे वे हैं जो सिर्फ इस दुनिया में रहना चाहते हैं, वे 'हैवान' के अलावा कुछ नहीं हैं ।

अतः प्राणनाथ के अनुसार सभी नारायण या विष्णु भक्त 'काफ़िर' हैं, और क़यामत के समय 'दोज़ख की आग' में जलेंगे । देखा जाए तो 'कृष्ण' भी विष्णु अवतार हैं अर्थात उनके भक्त भी दोज़ख में ही जलेंगे । क्यूंकि प्राणनाथ ने स्वयं कहा है की 11 वर्ष और 52 दिन के बाद कृष्ण का रूप 'वैकुण्ठनाथ विष्णु' का है ।

एही फौज दुनी अजाजील की, याही अकलें लगी लानत ।
पेहेचान हुई सब हुकमें, पीछे छूटी बखत कयामत ॥
सनन्ध 38.54
अगर 'कयामत' के समय अजाजिल अज्ञानता से मुक्त होकर प्राणनाथ को समझ लेंगे तो उन्हें श्राप से मुक्ति मिल जाएगी । प्राणनाथ के अनुसार भगवान विष्णु को शाप दिया गया है, क्योंकि उन्होंने सभी आत्माओं को 'सर्वोच्च भगवान प्राणनाथ' के मार्ग से भटका दिया है । जिस कारण विष्णु 'अज़ाज़िल' दोज़ख की आग में जलेंगे । प्रणामी कहते हैं कि इसका उपयोग केवल हिंदू धर्मग्रंथों का गहरा अर्थ समझाने के लिए है ।

लेकिन अब प्राणनाथ नाम लेकर 'भगवान विष्णु' का तिरस्कार करेगा !

कोई कहे विष्णु नारायन, कोई अरहंत बतावे ।
कोई देवी देव पत्थर, पानी आग पुजावे ॥ मारफत सागर 3.59

कुछ लोग 'नारायण' विष्णु को मानते हैं, कुछ 'अरिहंत' को । कुछ देवी और देवताओं की पूजा करते हैं और कुछ पत्थर, पानी और आग की पूजा करते हैं । हिंदू धर्म में हर वस्तु को भगवान के रूप में पूजते हैं: जैसे सूर्यदेव, वरुणदेव, अग्निदेव आदि । इसलिए प्राणनाथ कटाक्ष करते हुए हिंदू धर्म का मजाक उड़ा रहे हैं ।

कई सिवी कई वैष्नवी, कई साखी समरथ ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ ॥ कलश हिंदुस्तानी 14.13
कुछ शैव 'शिवजी' के मत हैं, कुछ वैष्णव 'विष्णुजी' के मत हैं, कुछ साखी 'देवी' के मत हैं, और कुछ 'स्मार्त' मत यानी सभी भगवानों को बराबर मानने वाले हैं । लेकिन यह सभी अहंकार में मग्न होकर खेल रहे हैं, जिससे 'छल और अनर्थ' हो रहा है ।

रखे कहेने धोखो रहे, आ जुआ कह्या अवतार ।
तो ए केहेनी बुधें विष्णुने, जगवी पोहोंचाड्यो पार ॥ कलश गुजराती 7.40
किसी के भी मन में धोखा ना रह जाए इसीलिए मैं दोनों 'बुद्ध अवतार' और 'निष्कलंक बुद्ध अवतार' बारे में बता रहा हूँ । आप स्वयं विचार कीजिये की कौनसा 'बुद्ध' भगवान विष्णु को जाग्रत करके 'परमधाम' में पहुंचाएगा ?

अमें बुधने प्रकासी करी, जासूं अमारे घर ।
वैकुंठ विष्णु ने जगवसे, बुध देसे सर्वे खबर ॥ कलश गुजराती 12.92
जब बुद्ध निष्कलंक तारतम ज्ञान का प्रचार करके 'परमधाम' अपने घर चले जायेंगे, तब वैकुण्ठ वासी भगवान विष्णु की बुद्धि जाग्रत होगी और उन्हें परमधाम की पहचान हो जाएगी ।

जीव विष्णु महाविष्णु लों, याके कई विध नाम धरत ।
अग्यान ग्यान ले विग्यान, यों कई विध खेल खेलत ॥ किरन्तन 107.5

संसार के जीव भगवान विष्णु या महाविष्णु या उनके और भी अन्य नाम, रूप 'नारायण' को ही सच्चिदानंद परब्रह्म मानते हैं । इस प्रकार वे ज्ञान, अज्ञान और विज्ञान की आड़ में अनेक प्रपंचों में भटकते रहते हैं ।

ए बात पोहोंची जाए वैकुंठ, बुधजीऐं उड़ायो उनमान ।
सुक सिव सन ब्रह्मा नमे, नमे विष्णु लखमी नारायन ॥ किरन्तन 55.23

वैकुण्ठ में जब यह बात पहुंची की सच्चिदानंद परब्रह्म बुद्ध निष्कलंक अवतार 'प्राणनाथ' धरती पर अवतरित हो चुके हैं, तब यह सुनकर सुकदेव, शिवजी, सनकादिक, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी-नारायण भाव विभोर होकर 'प्राणनाथ' के आगे नतमस्तक हो गए ।

यह पढ़कर लगता है की प्राणनाथ हाथ धो कर 'भगवान विष्णु' के पीछे ही पड़ गया है । अब वह उन लोगों को धिक्कारेगा जो उसे सर्वोच्च नहीं मानते !

सब आम लानत देवहीं, जिन इस इसलाम ।
हुई ख्वारी सब में, पुकारत खलक तमाम ॥
बीतक 46.4

इस्लाम के उन लोगों को 'लानत' है जिन्होंने इमाम मेहंदी का पैगाम ठुकरा दिया है, अपने इस गुनाह के कारण वे सभी लोग नष्ट हो जायेंगे ।

इन मोती को मोल कहयो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए ।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे ॥
बड़ा कयामतनामा 8.55

प्राणनाथ की महिमा को ना तो शब्दों में वर्णित किया जा सकता है और न ही सुना जा सकता है । जो उनकी महिमा को शब्दों में बाँधने का प्रयास करेगा वह 'दोज़ख की आग' में जलेगा और जो उन शब्दों को सुनेगा वह भी 'दोज़ख' में जलेगा ।

क़ुल्ज़म स्वरूप को पढ़ते समय कभी-कभी मैं चकरा जाता हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि प्राणनाथ शास्त्रों का वास्तविक अर्थ समझ नहीं सका इसलिए उसने अपनी क्षमता के अनुसार कुछ भी बकवास लिखकर 'अर्थ का अनर्थ' कर दिया ।

यदि प्राणनाथ मुस्लिम हैं और हिंदू देवताओं का अपमान करते हैं, तो फिर वे स्वयं को भगवान विष्णु का कल्कि अवतार क्यों कहते हैं?

हाँ ! ऐसे कई उदाहरण हैं जहां प्राणनाथ खुद के 'कल्कि या निष्कलंक अवतार' होने का दावा करते हैं ।

बुध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर ।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर ॥
ख़ुलासा 13.52

शास्त्रों में उल्लेख है कि 'बुद्ध निष्कलंक अवतार' प्रकट होगा और कलियुग का अंत करेगा । वह सभी 'असुरों' को मार डालेगा और शेष आत्माओं को मोक्ष देगा ।

पांचमें सिपारे में एह बयान, न मानो सो जाए देखो कुरान ।
और हिंदवी किताबोंमें यों कही, बुध कलंकी आवेगा सही ॥
बड़ा कयामतनामा 1.25

प्राणनाथ कहते हैं कि जो लोग मुझ पर विश्वास नहीं करते उन्हें कुरान का 5वां सिपारा देखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि भविष्य में 'बुद्ध निष्कलंक अवतार' प्रकट होगा । इसका उल्लेख भविष्य पुराण, बौद्ध गीता, श्रीमद्भागवत आदि हिंदू धर्मग्रंथों में भी किया गया है, लेकिन मुझे कुरान में ऐसी कोई अयात नहीं मिली जो ऐसा कहती हो ।

आप खुद इस लिंक पर जाकर देख सकते हैं:

https://hindiquran.in/surah-al-maida-5/

विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार ।
वेदों कहया आखिर जमाने, एही है सिरदार ॥
सनन्ध 36.46

जैसा की हिंदू धर्मग्रंथों में लिखा है कि कलियुग के अंत में विजियाभिनन्दन बुद्धजी और निष्कलंक अवतार 'प्राणनाथ' एक ही तन में प्रकट होंगे । वेदों के अनुसार अंत समय में वही सबके 'सरदार' हैं ।

ता ऊपर औरंगजेब, ए कलियुग के नाम ।
आगे अवतार होयगा, बुद्ध कलंकी इस ठाम ॥
बीतक 1.27

कलियुग में जब औरंगजेब भारत का राजा बनेगा, तब 'बौद्ध निष्कलंक या कल्कि' का अवतार होगा ।

विजिया-अभिनंद-बुधजी, और नेहेकलंक अवतार ।
कायम करसी सब दुनियां, त्रिगुन को पोहोंचावें पार ॥
ख़ुलासा 13.59

शास्त्रों में लिखा है कि विजयाभिनंदन बुद्ध और निष्कलंक कल्कि अवतार आएंगे और इस भौतिक संसार से 'त्रिगुण' ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित पूरे विश्व को मुक्त करेंगे ।

प्राणनाथ को 'विजयाभिनंदन बुद्ध निष्कलंक' अवतार की उपाधि तब दी गई जब उन्होंने हरिद्वार में हुए शास्त्रार्थ में अन्य संप्रदाय के विद्वानों को पराजित कर दिया था ।

अब सवाल यह है कि प्राणनाथ ब्रह्मा, विष्णु और शिव की त्रिमूर्ति को मुक्त क्यों करना चाहते हैं, क्या वे भगवान नहीं हैं ? या वह उन्हें नश्वर जीवों की तरह मानते हैं ?
जिसके लिए वह कहते हैं:

तब श्री जी ए कह्या, ए तो कह्या मिने इण्ड ।
ए महाप्रलय में ना रहे, उड़े त्रिगुन समेत ब्रह्माण्ड ॥
बीतक 18.47
श्रीजी ‘प्राणनाथ’ ने कहा कि जब महाप्रलय के समय 14 लोकों के साथ-साथ 'धरती, आकाश और पाताल' ये तीन लोक भी मौजूद नहीं रहेंगे, तो त्रिगुण 'ब्रह्मा, विष्णु और शिव' कैसे जीवित रह सकते हैं । महाप्रलय में उनकी भी मृत्यु हो जायेगी ।

14 लोक हैं: सत्य, तप, जन, महर, स्वर्ग, भुवर, भू, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल । प्राणनाथ कहते हैं कि महाप्रलय के बाद विष्णु का निवास 'वैकुंठ' भी नष्ट हो जाता है, लेकिन वैकुंठ 14 लोकों में शामिल नहीं है; क्योंकि यह गोलोक, साकेत और कैलाश के समान सर्वोच्च लोक में है, जो सभी नित्य हैं ।

अब प्राणनाथ 'वैकुण्ठ' का मजाक उड़ाएगा:

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल ।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल ॥
कलश हिंदुस्तानी 17.30
14 लोकों के इस ब्रह्मांड में कुछ वैकुंठ में रहते हैं, कुछ यमपुरी में, कुछ स्वर्ग में और कुछ नरक में । वे सब स्वप्न में जी रहे हैं, जो मोह सागर से घिरा हुआ है ।

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान ।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान ॥
किरणतन 78.2
करोड़ों वैकुंठ भी परमधाम की सुंदरता की बराबरी नहीं कर सकते जो की राजजी या प्राणनाथ का निवास है । इसलिए हमें जाग जाना चाहिए क्योंकि सत्य को ना देखने से हमारा जीवन बर्बाद हो रहा है ।

यहाँ एक कन्फूजन है ! प्राणनाथ 'कल्कि' होने का दावा करते हैं लेकिन साथ ही वह यह भी कहते हैं कि विष्णु अज़ाज़िल 'शैतान' हैं और महाप्रलय में मर जाएंगे, साथ ही वैकुंठ का भी अपमान करते हैं। प्राणनाथ कहना क्या चाहते हैं ?

ऐसा इसलिए है क्योंकि 'कल्कि अवतार' का विषय शिया इस्लाम के 'निज़ारी इस्माइली' संप्रदाय में भी मौजूद है। जिसे प्राणनाथ ने 'हब्सा' में कबूल किया था। नीचे दी गई तस्वीर में आप एक घोड़े को देख सकते हैं, जिस पर 'कल्कि' बैठे हुए हैं, आप एक 'हाथ' का चिन्ह भी देख सकते हैं। यह हाथ का चिन्ह पन्ना मंदिर में भी है, जिसे 'अनंत श्री प्राणनाथजी का मंदिर' कहा जाता है।







ऊपर दिए चित्र में आप हाथ के चिन्ह को विस्तार से देख सकते हैं। लेफ्ट वाला प्राणनाथ मंदिर का है और राइट वाला 'शिया मस्जिद' में प्रयुक्त चिन्ह है। इस 'हाथ' का अर्थ है 'पंजतन पाक; मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। फातिमा, मुहम्मद फातिमा के पिता थे और अली उनके पति, हसन और हुसैन फातिमा के पुत्र थे। इस चिन्ह को सिर्फ 'फातिमा का हाथ' भी कहा जाता है।

लेकिन प्राणनाथ का 'कल्कि' होने का दावा सरासर झूठ है ! क्योंकि हिंदू धर्मग्रंथों में लिखा है कि कल्कि कलियुग के अंत समय में प्रकट होंगे, लेकिन प्राणनाथ के जीवित रहते तो कलियुग समाप्त नहीं हुआ? यह भी कहा जाता है कि कल्कि का जन्म 'संभल ग्राम' में एक ब्राह्मण परिवार में 'विष्णुयश और सुमति' के घर में होगा, लेकिन प्राणनाथ का जन्म गुजरात के जामनगर में एक लोहाना राजपूत परिवार में केशव ठाकुर और धनबाई के घर 'मेहराज' के रूप में हुआ था ।

यदि वह कल्कि थे तो उन्होंने उस समय भारत पर शासन कर रहे मुगल राजा औरंगजेब से युद्ध क्यों नहीं किया? इसके बजाय वह औरंगज़ेब को खुद के ‘दीन इस्लाम’ स्वीकार करवाने पर क्यों तुले हुए थे, कुछ श्लोक हैं जो यह बताते हैं:

गोवरधन के दिल में, डर रहे मुसलमान ।
पोहोरा औरंगजेब का, जिन कोई सुनो कान ॥
बीतक 39.6
गोवर्धन का दिल में मुसलमानों और औरंगजेब का भय था, क्योंकि वे उन्हें समझाना चाहते थे की एक गैर-मुस्लिम परिवार में पैदा हुआ प्राणनाथ उन्हें कुरान और अल्लाह के बारे में इतना कैसे बता सकता है ।

और हिन्दू के भेस से, होए नही ए काम ।
इन भेस सों मजलिस, परतीत न करे इसलाम ॥
बीतक 47.79
वह जानता था कि यदि वे हिंदू के वेश में वहां जाएंगे जहां इस्लाम के सभी कट्टरपंथी मौजूद हैं तो वे औरंगजेब से नहीं मिल पाएंगे । इसके बाद प्राणनाथ द्वारा चुने गए ’12 मोमिनों’ को औरंगजेब के पास यह संदेश लेकर भेजा गया की “प्राणनाथ उनसे मिलना चाहते हैं ।” वहां पहुंच कर 12 मोमिनों ने नमाज पढ़ी और कहा ।

तब निमाज़ कजा होवे, जो हम पकड़े मुरदार ।
हम वास्ते दीन इसलाम के, काम करें परवरदिगार ॥
बीतक 43.87

उन्होंने कहा कि अगर हम इस नश्वर दुनिया से आकर्षित हैं तो आप हमारी नमाज़ को झूठा मान सकते हैं, लेकिन हम 'दीन इस्लाम' का प्रसार कर रहे हैं और अल्लाह का नेक काम कर रहे हैं । इतना कहने के बाद भी ये 12 मोमिन, औरंगजेब को समझाने में सफल नहीं हो सके और प्राणनाथ के पास वापस लौट आये । उस समय प्राणनाथ पन्ना में थे जहाँ उनकी मुलाकात छत्रसाल से हुई, जो एक क्षत्रिय राजा थे और उस समय औरंगजेब से युद्ध कर रहे थे ।

इसलिए जब प्राणनाथ की औरंगज़ेब को समझाने की सभी योजनाएँ विफल रहीं, तब उन्होंने छत्रसाल को उसके साथ लड़ने का आदेश दिया । उत्तर में छत्रसाल ने कहा:

तब मैं औरंगजेब सों, बांध के कमर ।
लड़ों वास्ते दीन के, सिर सोंप्या इन बात पर ॥
बीतक 53.48

मैं आपके सामने सर झुकाता हूँ, मैं अपनी कमर कस कर और 'दीन इस्लाम' फैलाने के लिए औरंगजेब से लडूंगा !

क्षत्रिय राजा छत्रसाल कौन थे और वह प्राणनाथ के दीन इस्लाम का प्रचार - प्रसार क्यों करना चाहते थे?

छत्रसाल बुन्देलखण्ड के शासक, एक क्षत्रिय राजा थे । उनका विवाह देव कुंवरी और रुहानी बेगम से हुआ था, रुहानी बेगम से उनकी एक बेटी थी 'मस्तानी', जिसकी शादी पेशवा बाजीराव प्रथम से हुई थी । रुहानी एक शिया मुस्लिम थीं । बाद में पन्ना के पास मऊ में छत्रसाल की मुलाकात प्राणनाथ से हुई और उन्होंने उसे अपना गुरु स्वीकार कर लिया, फिर उनके पसंदीदा शिष्य और उत्तराधिकारी बन गये ।

साखी कहके थाल ले, तिलक करयो श्री राज ।
भाल माहिं छत्रसाल के, कही आप बैठो महाराज ॥
बीतक 60.64
श्री राज 'प्राणनाथ' ने छत्रसाल को 'सखी' कहकर बुलाया और उनके माथे पर तिलक लगाया । फिर उन्होंने छत्रसाल को सिंहासन पर बैठने का आदेश दिया ।

बाद में प्राणनाथ ने औरंगजेब से लड़ने और 'दीन इस्लाम' का संदेश फैलाने के लिए छत्रसाल को अपनी तलवार 'जुल्फिकार' भी दी । जुल्फिकार वही तलवार है जो 'पैगंबर मोहम्मद' ने अपने दामाद अली को दी थी ।

मार्फत सागर 7.15 में एक चौपाई है:
अली आए खड़ा कबर पर, काढ़ के जुल्फिकार ।
कह्या न छोड़ोंगा किनको, आइयो होए हुसियार ॥
अली अपने हाथ में 'ज़ुल्फिकार' तलवार निकालकर मुहम्मद की कब्र की रक्षा के लिए उसे चारों ओर से घेरते हुए बोले - सावधान होकर मेरे पास आना अन्यथा मैं तुममें से किसी को भी जीवित नहीं छोड़ूंगा !

'जुल्फिकार तलवार' सबसे पहले जिब्राइल ने पैगंबर मुहम्मद को दी थी, फिर मुहम्मद ने इसे अपने दामाद को दी । लेकिन हम यह नहीं जानते कि प्राणनाथ ने जो तलवार छत्रसाल को दी थी वह असली थी या केवल उसका नाम जुल्फिकार रख दिया था ।

तलवार लेने के बाद छत्रसाल ने कहा:
इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान ।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान ॥
किरन्तन 118.19

जो लोग इमाम मुहम्मद मेहंदी 'प्राणनाथ' के धर्म 'दीन इस्लाम' का पालन करेंगे, मैं तन, मन और धन से उनकी सेवा करूँगा ।

इससे स्पष्ट होता है कि छत्रसाल को अच्छे से पता था कि प्राणनाथ द्वारा शुरू किया गया संप्रदाय 'इस्लाम' पर आधारित है, फिर भी उन्होंने प्राणनाथ को गुरु के रूप में स्वीकार करने का फैसला किया । इतना ही नहीं छत्रसाल ने 'राजजी और प्राणनाथ' की महानता का गुणगान करने वाली 'सेवापूजा' की भी रचना की थी ।

अब प्रश्न यह है कि प्राणनाथ वास्तव में कौन थे?

अपने शोध के बाद मुझे प्राणनाथ के द्वारा ही बताई गई सच्चाई का पता चला कि वे ना तो कोई संत हैं, ना ही वैष्णव तथा वे श्रीकृष्ण के भक्त भी नहीं हैं ।

रे हूँ नाहीं रे हूँ नाहीं सिध साध संत री भगत, नाहूँ वैष्णव अपरस आचार ।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूँ बरन अठार ॥
किरन्तन 11.1

प्राणनाथ कहते हैं कि मैं कोई संत, साधु, भक्त, वैष्णव या कर्मकांडी पंडित नहीं हूं । मैं उच्च या निम्न वर्ग से भी नहीं हूं, ना ही मैं 18 वर्णों से हूं, लेकिन वर्ण केवल 4 हैं; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

रे हूँ नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूँ जीव जगन ।
तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूँ तीरथ तरपन ॥
किरन्तन 11.2

मैं व्रत-उपवास करने वाला, दयालु, सन्ध्या-वन्दन या यज्ञ करने वाला नहीं हूँ । ना ही मैं जीव और प्रकृति, तंत्र, मंत्र, किसी वेशभूषा या संप्रदाय में विश्वास करता हूं । मैं तीर्थयात्रा और पूर्वजों को तृप्त करने में भी विश्वास नहीं रखता ।

रे हूँ नाहीं करामात मत अगम निगम, धरम न करम उनमान ।
सुपन सुषुप्त जाग्रत न तुरिया, तप न जप न ध्यान ॥ किरन्तन 11.3

मैं चमत्कार दिखाने, वेद-पुराणों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने, धार्मिक कर्म करने में विश्वास नहीं करता । मैं जागते, सोते या समाधि अवस्था में या तपस्या, जप, ध्यान में दिव्य अनुभूति होने में भी विश्वास नहीं करता ।

अगर प्राणनाथ 'चमत्कार' दिखाने में विश्वास नहीं रखता था तो फिर उसने विषैली किलकिला नदी में 'पैर का अंगूठा' डालकर उसे पवित्र कैसे कर दिया ? क्या यह चमत्कार नहीं है ?

रे हूँ नाहीं अंग इंद्री ग्यान ब्रह्मचारी, ब्रह्मांड न लगत वचन ।
रूप रंग रस धात में नाहीं, गुन पख दिवस ना रैन ॥
किरन्तन 11.4

मैं वह ज्ञानी या ब्रह्मचारी नहीं हूं जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया है । मैं रूप, रंग, भाव, गंध, तीन गुण, दो पक्ष, दिन या रात तक सीमित नहीं हूं ।

रे हूँ नाहीं सब्द सोहं जो तत्व पांच में, ना खट चक्र सिर पवन ।
त्रिकुटी त्रिवेनी तीनों ही काल में, ना अनहद अजपा आसन ॥
किरन्तन 11.5

ना ही मैं सो-अहम् शब्द में, पांच तत्वों में, ना प्राणवायु में, जो छह चक्रों को सक्रिय करता है, या इड़ा-पिंगला नाड़ियों में, जिन्हें त्रिकुटी और त्रिवेणी कहा जाता है, न ही मैं अनहद नाद, अजपा जप या आसन में हूं ।

रे हूँ नाहीं नवधा में मुक्त में भी नाहीं, ना हूँ आवा गवन ।
वेद कतेब हिसाब में नाहीं, ना मांहें बाहेर ना सुंन ॥

किरन्तन 11.6

ना मैं नवधा भक्ति में हूँ और ना ही मुक्ति में । ना ही मैं आवागमन अर्थात बार-बार जन्म लेने में हूँ । वेद-कतेब भी मेरा हिसाब नहीं लगा सकते, मैं तो शुन्य और निराकार से भी परे हूँ ।

रे हूँ नाहीं न्यारा जहां हूँ तहां नजीक में, ना हूँ उनमुनी आकार ।
ना हूँ दृष्टें किन सुनिया री सृष्टें, ना हूँ निराकार ॥

किरन्तन 11.7

ना मैं सबसे न्यारा हूँ, ना नजदीक हूँ, ना ही मेरा कोई आकार है । ना ही इस सृष्टि में मुझे किसी ने देखा है ना ही मेरे बारे में सुना है, मैं तो निराकार भी नहीं हूँ ।

तुम सांचे सिध साध भगवत तुमको वैष्णवो, सांच सकल संसार ।
भनत महामत तुम अमर होउ याही में, मैं न कछू यामें निरधार ॥

किरन्तन 11.8

प्राणनाथ का कहना है - हे वैष्णवों ! तुम तो सच्चे पुरुष, सिद्ध, साधु और भगवान के भक्त हो । तुम्हारे लिये तो यह संसार ही परम सत्य है, इसलिये तुम इसी में अमर होकर रहो । मेरा तो इस संसार से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

सीधे शब्दों में प्राणनाथ का कहना है कि ना ही वह कोई साधु संत है, ना वह भगवान में मानता है । वह हिंदू धर्म तथा उससे जुड़ी किसी भी प्रथा में नहीं है, क्योंकि वह तो एक 'निजारी इस्माइली' शिया मुसलमान है । अब मुझे लगता है कि हमारे पास उन्हें 'मुसलमान' साबित करने के लिए उनके धर्मग्रंथों से पर्याप्त सबूत हैं ।

यदि प्राणनाथ हिंदू धर्म से नफरत करते थे और मुसलमान थे ? तो वह औरंगजेब का धर्म परिवर्तन क्यों कराना चाहते थे जो की पहले से ही मुसलमान था ?

ऐसा इसलिए है क्योंकि कुलज़म शरीफ़ के अनुसार प्रत्येक आत्मा 'परमधाम की सखी' है जो इस धरती पर लीला करने के लिए प्रकट हुई है । जब वे सभी फिर से एकत्र जायेंगे तब उनका 'जागनी' का काम पूरा हो जायेगा । इस धारणा के अनुसार प्राणनाथ 'इंद्रावती' हैं, देवचंद्र 'श्यामा' हैं, छत्रसाल 'साकुण्डल' हैं तथा औरंगजेब 'साकुमार' सखी हैं ।

साकुण्डल साकुमार ढूंढ़न की, एकान्त होय सुनाई बात ।
मूल सरुप उनके हँसत हैं, ओ खेल में हैं अपनी जात ॥
बीतक 13.51

साकुण्डल 'छत्रसाल' और साकुमार 'औरंगजेब' इस संसार में राजघरानों में अवतरित हुए हैं । उनके 'मूल शरीर' परमधाम में हंस रहे हैं इसलिए हमें उनकी आत्माओं को जगाना होगा ।

आज से सकुमार बाई, आवें आठमें दिन ।
तब राज बड़ो आदर कियो, कहे बैठाओ जोड़े सैयन ॥
बीतक 35.7

प्राणनाथ के एक शिष्य लक्ष्मीदास ने कहा: आज से आठ दिन बाद साकुमार 'औरंगजेब' की आत्मा जाग्रत होगी । तब राज 'प्राणनाथ' ने उनका बड़ा सम्मान किया और कहा: आओ मेरे बगल में बैठो ।

ऐसा जान हम बारह जने, पैठे बीच दरबार ।
सो हमको सकुमार ने, कहया मजलिसे यों कर ॥
बीतक 48.12

यह बात जानकर हम सभी '12 जने' यानी मोमिन औरंगजेब के दरबार में गए । वहां हमें साकुमार 'औरंगजेब' ने कहा - यहाँ 'मजलिस' अर्थात चर्चा करो ।

लेकिन जब औरंगजेब 'जाग्रत' नहीं हो सका तब प्राणनाथ ने कहा:

हम सकुमार बाई की, बात का किया विचार ।
ये तो साहिबी बोहोत बड़ी, घूना घून नाहीं सुमार ॥
बीतक 48.3

हमने औरंगजेब की आत्मा को जगाने का विचार किया लेकिन वह जाग्रत क्यों नहीं हुई ? इससे तो यही लगता है की वो खुद की 'साहेबी' शासन को बड़ा मानता है, क्यूंकि उसके पास बेशुमार दौलत और सेना है ।

औरंगजेब के बारे में खोजते हुए मुझे एक ऐसा श्लोक मिला, जिसमें देवचन्द्र भी औरंगजेब को 'सकुमार सखी' कहते हैं ।

सकुण्डल सकुमार को, चले जगावन काज ।
श्री मुख श्री देवचन्द्र जी कही, बुलाए ल्याओ श्री मेहेराज ॥
बीतक 32.12

श्री देवचन्द्रजी ने अपने एक शिष्य से कहा - जाओ मेहेराज को बुला लाओ ! क्यूंकि उसे ही ‘सकुण्डल और सकुमार’ को जगाने का कार्य करना है ।

लेकिन जब औरंगजेब की 'जागनी' नहीं हो पाई तो प्राणनाथ ने दोष एक काजी मुल्ले पर मढ़ दिया । पर असली वजह यह है कि औरंगजेब को इस बात पर विश्वास ही नहीं था कि हिंदू घर में पैदा हुआ व्यक्ति ‘इमाम मेहंदी’ कैसे हो सकता है । प्राणनाथ खुद को इमाम मेहंदी कहता था, लेकिन फिर भी औरंगज़ेब को जगा नहीं सका । क़ुलज़म शरीफ़ में लिखा है कि जब औरंगज़ेब ने 'दीन इस्लाम' में शामिल होने से इनकार कर दिया तो प्राणनाथ ने उसे शाप दे दिया ।

ज्यों फेरून दुआ मूसे की, रोंद नील में हुआ गरक ।
त्यों औरंगजेब पर, फेरा फुरमान हक ॥
बीतक 61.19

जिस प्रकार फरौन का क्रूर राजा 'फेरन' अपनी सेना सहित नीले समुद्र में डूबकर मर गया, उसी प्रकार प्राणनाथ की बात न मानने के कारण औरंगजेब भी अपनी सेना सहित नष्ट हो जायेगा ।

यहां हम देख सकते हैं कि प्राणनाथ का अहंकार कितना कमज़ोर है, जो औरंगजेब की अस्वीकृति भी बर्दाश्त नहीं कर सकता लेकिन खुद के पूर्णब्रह्म, अखरुल इमाम मेहंदी, इंद्रावती, राजजी, महामती, सर्वोच्च भगवान होने का दावा करता है ।

क्या ऐसे कोई प्रसिद्ध लोग हैं जो प्रणामी हैं या थे?

ऐसा ही एक नाम है 'महात्मा गांधी' उन्होंने अपनी पुस्तक 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में उल्लेख किया है कि वह बचपन में अपनी मां के साथ 'प्रणामी मंदिर' जाते थे, जहां पुजारी एक आयात 'कुरान' से और एक श्लोक 'गीता' से पढ़ते थे ।

इतना ही नहीं गांधी जी के पैदल चलने के प्रेम से हर कोई वाकिफ है और प्राणनाथ भी अपने जीवनकाल में खूब पैदल चले । इसलिए यह केवल संयोग नहीं हो सकता कि गांधी मुसलमानों को हिंदुओं से अधिक प्यार करते थे, जिसे भारत के विभाजन के समय देखा जा सकता था । जब उन्होंने कहा था कि **"हिंदुओं को मुसलमानों के खिलाफ कभी गुस्सा नहीं करना चाहिए, भले ही वे उन सभी को मारने का मन बना लें ।"**

इसका मतलब है कि गांधी जानते थे कि प्राणनाथ हिंदू के नाम पर एक मुसलमान थे, इसलिए उन्होंने प्रणामी होने के नाते 'भारत की आजादी' के समय इसका इस्तेमाल किया, अन्यथा वह स्वयं हिंदू कर भी यह क्यों चाहते की हिंदू मुसलमानों द्वारा मारे जाएं । यही कारण है कि उन्होंने हिंदू प्रार्थना '**रघुपति राघव राजा राम...सुंदर विग्रह मेघल श्याम**' से बदलकर '**रघुपति राघव राजा राम...ईश्वर अल्लाह तेरो नाम**' कर दिया । सरल शब्दों में मोहनदास गांधी भी निज़ारी इस्माइली 'शिया मुसलमान' थे ।

तो क्या इसने गांधीजी की आने वाली पीढ़ी को प्रभावित किया?

हाँ ! इसने इंदिरा जैसे भविष्य की गांधी पीढ़ी को प्रभावित किया, जिन्होंने वर्ष 1977 में चुनाव हारने के बाद अपने करीबी 'एचकेएल भगत' जो खुद एक प्रणामी थे, के साथ पन्ना मंदिर का दौरा किया जिसे 'दरगाह ए मुकद्दस या अनंत श्री प्राणनाथ मंदिर' के रूप में जाना जाता है ।

तभी उन्हें कांग्रेस पार्टी के नए चुनाव चिन्ह 'हाथ' का आईडिया आया । इसलिए हाथ का प्रतीक 'देवराह बाबा के आशीर्वाद' या 'इमूर भगवती मंदिर' में मौजूद दो हाथों की मूर्ति से प्रेरित नहीं है, बल्कि यह एक शिया हाथ 'पंजतन पाक' मुहम्मद, अली, फातिमा, हसन और हुसैन या फातिमा के हाथ का प्रतीक है । पहले कांग्रेस का चुनाव चिन्ह 'बछड़े वाली गाय' था । आप स्वयं चित्र देख सकते हैं:





इससे पता चलता है कि गांधी परिवार 'प्राणनाथ' से अत्यधिक प्रभावित थे । और इंदिरा गांधी के पन्ना मंदिर के दौरे के बाद उन्हें यह विचार आया कि इस्लामी पहचान छुपाते हुए हिंदू नाम रखकर भारतीयों को कैसे बेवकूफ बनाना है ।

यदि वे मुसलमान हैं तो उनकी प्रथाओं के लिए अन्य हिंदू समुदायों द्वारा उनका विरोध किया गया होगा?

हां समय-समय पर उनसे पूछा जाता रहा है कि उनकी असली पहचान क्या है? वे वास्तव में किससे सम्बन्ध रखते हैं?

ऐसी ही एक घटना नेपाल की है जब उन्हें अपनी पहचान साबित करने और सबसे ज़रूरी सवाल "आप कौन हैं?" का उत्तर देने के लिए 1935 से 1942 तक बहुत से अदालती मामले लड़ने पड़े । आप हिंदू हैं या मुसलमान? आख़िर मिलावटी रक्त शुद्ध से बेहतर कैसे हो सकता है ?”

1942 में नेपाल में, प्रणामियों से देश छोड़ने के लिए कहा गया क्योंकि वे हिंदू नहीं थे, और नेपाल ने हिंदू राष्ट्र बनने का फैसला किया था । उनसे पुछा गया की अगर वे हिंदू हैं तो वे अपने मृतकों को दफनाते क्यों हैं ? और उनके मंदिर पर शिया हाथ का प्रतीक 'पंजतन पाक' क्यों है । तब से प्रणामी हाथ को 'पंजा साहेब' कहने लगे !

दूसरी घटना 1983 की है, जब मध्य प्रदेश के रीवा में 'प्रणामी समुदाय' के लिए मुकदमा लड़ रहे 'निजानंदियों' के मुख्य पुजारी जगदीश चंद्र पर मुसलमान होने और लोगों को गुमराह करने का आरोप लगाया गया तथा मंदिर परिसर को सौंपने के लिए कहा गया । क्यूंकि उन पर अवैध रूप से कब्ज़ा करने का आरोप था । जगदीश चंद्र ने अदालत में साबित करने के लिए की वे कृष्ण के भक्त हैं, तारतम मंत्र '**निजनाम श्रीजीसाहेबजी**' से '**निजनाम श्रीकृष्णजी**' कर दिया और इसके बाद उन्होंने केस जीत लिया ।

क्या प्रणामियों और निजानंदियों की युवा पीढ़ी अपने धर्म के इस्लामी पहलुओं के बारे में जानती है?

युवा पीढ़ी पूरी तरह धर्म से जुडी नहीं है क्योंकि वे मंदिर तो जाते हैं लेकिन धर्मग्रंथ नहीं पढ़ते । यही कारण है कि उन्हें इस्लामी पहलुओं के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है । लेकिन पुरानी पीढ़ी जैसे भारत की आजादी के आसपास पैदा हुए लोग यह जानते हैं । हालाँकि कुछ युवा लोग सवाल करते हैं कि यदि वे कृष्ण के भक्त हैं तो वे प्राणनाथ को सर्वोच्च मानकर उनकी पूजा क्यों करते हैं और '**प्राणनाथ प्यारे की जय, धाम के धनी की जय, निजानंद स्वामी की जय, महाराज छत्रसाल जू की जय, बाईजू राज महारानी की जय**’ आदि कहकर उनकी महिमा क्यों गाते हैं ।

क्यों मेहर सागर और संध्या आरती में ‘कृष्ण’ का नाम नहीं है ? लेकिन उनमें से कोई भी यह नहीं सोचता कि अगर वे हिंदू हैं तो ‘अल्लाह और मुहम्मद’ की महिमा क्यों गाते हैं । इसलिए जब भी युवा इस्लामी पहचान के बारे में सवाल करते हैं, तो उन्हें चुप रहने के लिए कहा जाता है क्योंकि ऐसा करना प्राणनाथ और राजजी का अपमान होगा ।

यदि प्रणामी और निजानंदी प्राणनाथ के भक्त हैं और मुसलमान हैं तो क्या यह उनकी रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों या मंदिरों से देखा जा सकता है?

यदि कोई अनजान व्यक्ति पहली बार उनके मंदिर में जाएगा तो उसे वह किसी अन्य हिंदू मंदिर की तरह ही लगेगा क्योंकि मंदिर के अंदर राधा-कृष्ण की लीलाओं की मूर्तियां और पेंटिंग हैं । इससे लगता है की वे कृष्ण के भक्त हैं, लेकिन जब आप गर्भगृह को देखते हैं तो वहां कोई मूर्ति नहीं होती है, बल्कि इसमें केवल वस्त्र और आभूषणों के साथ सजाया गया मुकुट होता है । क़ुलज़म शरीफ़ को रंग-बिरंगे कपड़ों से ढका होता है और उसी के ऊपर सोने के मुकुट रखे होते हैं, वे इस रूप को 'बांगमय स्वरूप' कहते हैं । मैं फिर से एक चित्र लगा रहा हूं:



इस चित्र में हम लेफ्ट साइड में एक बांसुरी देख सकते हैं, लेकिन बांसुरी हर मंदिर में मौजूद नहीं होती है । पन्ना, सूरत और जामनगर के कुछ मंदिरों में बांसुरी नहीं है । प्रणामियों के अनुसार यह रूप राधा-कृष्ण और राज-श्यामा जी को दर्शाता है, लेकिन निजानंदियों के अनुसार यह केवल 'राज-श्यामाजी' को दर्शाता है ।

पन्ना मंदिर यानी श्री 5 पद्मावती पुरी धाम में केवल एक ही मुकुट है जो राजजी 'प्राणनाथ' का स्वरुप है, बांसुरी मौजूद है लेकिन वह कृष्ण के माध्यम से राजजी की शक्ति का प्रतीक है ।



यह मंदिर के अंदर का चित्र है जिसे 'दरगाह-ए-मुक्कदस' नाम से भी जाना जाता है । जब भी प्रणामी और निजानंदी अपने मंदिरों में जाते हैं तो वे हिंदुओं की तरह ही गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा करते हैं । जहाँ अन्य हिंदू मंदिरों की तरह ही प्रसाद और चरणामृत होता है, अंतर केवल इतना है कि उनके मंदिर में 'तारतम भवन' नामक एक प्रार्थना कक्ष होता है जहां प्राणनाथ के चरण-पादुका रखे होते हैं और कोई भी फर्श पर बैठकर 'तारतम मंत्र' का जाप कर सकता है । जब भी कोई जयंती या कार्यक्रम होता है तो पूरे समुदाय के लिए 'लंगर' का आयोजन किया जाता है ।

यहां तक कि उनकी शादी में भी हिन्दुओं के जैसे ही फेरे होते हैं, वे 7 के बजाय 4 फेरे लेते हैं, और अग्नि के बजाय वे कुलज़म स्वरूप के चारों फेरे लेते हैं, जिसके बाद वे आरती करते हैं जो 'कंचन थाल चहुं मुख दिवला' से शुरू होती है।

इन रीतिओं लगता है की वे अन्य हिंदू समुदाय से हैं तथा कृष्ण भक्त हैं, लेकिन उनकी वास्तविक पहचान भ्रामक है ।

जैसा कि मैंने पहले कहा था छत्रसाल द्वारा लिखित 'सेवापूजा' से कई बातें पता चलती हैं, आइए पूर्णब्रह्म स्तुति से शुरू करते हैं:

पूर्णब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनंद अखंड अपार ।
शिव सनकादिक आदि के इच्छित, शेष ना पावत पार.....
.....वारी वारी जाऊं मैं अपने पिया पर, शोभा मुंखहुँ न आवे ।
सिंहासन आसान बैठारे, 'छत्रसाल' गुण गावे ॥

पूरणब्रह्म 'प्राणनाथ' ब्रह्म से भी महान हैं, आनंदमय और शाश्वत हैं । यहां तक कि भगवान शिव, सनकादिक; ब्रह्मा के 4 पुत्र, शेषनाग भी प्राणनाथ के दिव्य दर्शन नहीं कर सकते । इसलिए जब मैं अपने स्वामी की सुंदरता देखता हूं तो मैं बार-बार उनके सामने शीश झुकाता हूं, क्योंकि वह अपने सिंहासन पर बैठे हैं और मैं 'छत्रसाल' उनकी महिमा गाता हूं ।

इस आरती की रचना छत्रसाल ने तब की थी जब वे प्राणनाथ से पहली बार मिले थे । तब उन्होंने प्राणनाथ और उनकी पत्नी बाईजू राज को प्रणाम किया ।

दूसरा है 'प्रातःकाल का स्वरुप':

श्रीराज श्रीठकुराणी जी प्रथम भोम में बिराजमान भये तहँ कंचन रंग को सिंहासन, तिन के छः पाए छः डांडे एक-एक डांडे में रंग जवेरों की झलकत हैं, दो छतरी दो स्वरूपों के ऊपर, दो फूल लाल मानिक के कमल केसी निलवीकी पांखड़ी । छतरी के चारों तरफों जवेरों की झालर । छः डांडों पर छः कलश, दो कलश दो छतरियों के ऊपर ऐ आठों कलश हेम के, उतरती कांगरी, पशमी बिछौना, एक गादी, दोय चाकले, ता पर पांच तकिये । श्रीराज श्रीठकुराणी जी दो चाकले पर बिराजमान भये ।

कई चाकले चित्रकारी । ता पर बैठे श्रीयुगल विहारी, दोउ स्वरुप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे । आत्मा से न्यारे ना कीजे अधक्षिण । फेर फेर कीजे दर्शन । पहले अंगुली नख चरण, मस्तकलों कीजे वर्णन । सब अंग वस्तर भूषण शोभा जाने आत्म के लगन । सुन्दर श्री ठकुराणी जी को सिनगार, सेंदुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाहिको चरणियां । श्री राजजी को सिनगार, सेंदुरिया रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौरी । नीलो ना पीलो बीच के रंग को पटुका, केशरिया रंग जड़ाव की इजार, श्वेत रंग जड़ाव को जामा । श्रीयुगल स्वरुप को मूल वागो, अद्वैत की लाठी हाथ में लेयके, सब साथ को प्रणाम ।
इस आरती में छत्रसाल बताते हैं कि राजजी और श्यामा जी कैसे दिखते हैं:

श्रीराज और श्रीठकुरानी प्रथम भोम में स्थित 'स्वर्ण सिंहासन' पर विराजमान हैं। इसमें छह स्तंभ हैं, प्रत्येक स्तंभ रंग-बिरंगे रत्नों से सजाया गया है । इन दोनों के ऊपर दो छतरियाँ हैं, जिनमें माणिक, केशी, नीलवी की पंखुड़ियों के साथ कमल के दो फूल हैं। छतरी के चारों ओर आभूषणों की झालरें, छह खंभों पर छह कलश, दो छतरियों पर 2 कलश, उतरती हुई कांगड़ी, पशमीना वस्त्र, दो पार्टीशन वाला एक गद्दा, पांच तकिए । श्रीराज और श्रीठकुरानी उन दो विभाजनों पर बैठे हैं ।

सिंहासन पर अनेक चित्र उकेरे हुए हैं, पहले हमें चरण और उँगलियों पर दृष्टि डालनी चाहिए फिर चेहरे पर । श्रीठकुरानी का सिंगार अत्यंत सुंदर है, उन्होंने लाल रंग की साड़ी के साथ काले रंग का ब्लाउज पहना हुआ है, उनके नाखून नीले रंग से रंगे हुए हैं । श्री राजजी लाल रंग की पगड़ी, आसमानी रंग का केसरिया रंग की कढ़ाई वाला दुपट्टा पहने हुए हैं । एक पटका जो नीले और पीले रंग के बीच का है, पूरा जामा सफेद है । ऐसा दिखता है असली युगलस्वरूप, मैं सभी को प्रणाम करता हूं ।

इस विवरण को पढ़ने के बाद जो छवि सामने आती है वह देखिये:



आप खुद देख सकते हैं कि राज 'कृष्ण' नहीं हैं क्योंकि आरती में कहीं भी 'बांसुरी या मोर पंख' का जिक्र नहीं है । ना ही राज की त्वचा का रंग मेघलस्याम है; वर्षा के मेघों का रंग, ना ही उन्होंने 'पीताम्बर' धारण किया है तो राज 'प्राणनाथ' का ही दूसरा रूप है, जिसके माध्यम से वह लोगों से अपनी पूजा करवा सके ।

अब आता है संध्या स्मरण:

सँझा सुमिरन आरती, भजन भरोसे दास ।

मनसा वाचा कर्मणा, श्रीयुगल चरण की आस ॥

श्वास-श्वास निजनाम जपो, वृथा श्वास मत खोय ।

ना जानो ये श्वास को, आवन होय ना होय ॥

तन दीपक मन ज्योत करूँ, प्रेम घृत लौ लाय ।

शोभा लखि श्रीराज की, आरती करूँ चित्त लाय ॥

इस आरती में हम पंक्ति 'श्वास-श्वास निजनाम जपो....आवन होय न होय' देख सकते हैं, यह 'श्वास-श्वास हरिनाम जपो' से ली गई है। वह निजनाम 'राज-श्यामाजी' है और अंतिम पंक्ति 'श्रीराज' के बारे में बात करती है। अब ‘कंचन थाल’ जोकि संध्या की ही एक और आरती है:

कंचन थाल चहुँ मुख दिवला, दीपक ज्योति प्रकाशी ।

और समाप्त होती है....

तन मन जीव निछावर किन्हें, श्रीमहामती चरणों लागी ॥

यह आरती बताती है कि व्यक्ति को अपनी आत्मा और शरीर श्रीमहामती प्राणनाथ के चरण कमलों में समर्पित कर देना चाहिए ।

अब यात्रा के समय की एक प्रार्थना आती है:

सदा महामति दाहिने, सन्मुख सुन्दरसाथ ।

नाम लेत छत्रसाल का, सिद्ध होत सब काज ॥

महामति प्राणनाथ सदैव अपने सुन्दरसाथ के हैं । अत: 'छत्रसाल' का नाम जपने से हमें प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी ।

अब 'राग नवखंडो आरती' जो विभिन्न संप्रदायों के संतों ने गयी थी जब प्राणनाथ ने उन्हें शास्त्रार्थ में हरा दिया था ।

इस आरती को 'राग-नवखंडो' आरती कहा जाता है, इसके बाद प्राणनाथ को 'विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक' अवतार के नाम से भी जाना जाने लगा ।

भई नई रे ! नवखंडो आरती, श्री विजयाभिनन्द बुधजी की आरती ।

प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती ॥

दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनंद विस्तारती....मैं पूरी आरती नहीं लिखूंगा लेकिन कुछ लाइनों से आपको इसका सन्दर्भ समझ में आ जायेगा:

सैन्य सहित आये त्रिपुरार, आये ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार ।

विष्णु वाणी बोलत जय जय कर, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

आये धर्मराज और इन्द्र वरुण, नारद मुनि गन्धर्व चौदे भवन ।

सुर असुरों सबो लई सरन, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

आये सनकादिक चारो थम्भ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रह्माण्ड ।

जो ब्रह्मा अनुभवी भये अखंड, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

आये चारो संप्रदाय के साधुजन, चार आश्रम और चार वरन ।

चारो खूंटो के आये गवते गुना, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

आए गच्छ चौरासी अरहन्ति, दत्तजी दसनामी जो महंती ।

आए करम उपासनी वेदांती, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

आए खट दरसन खट शास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथरव वेदी ।

आए सकल कैदी और बेक़ैदी, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

पियाजी हुक्में गावें श्री महामत, उड़ायो असत थाप्यो सत ।

सब पर कलस हुआ आख़िरत, भई नई रे ! नवखंडो आरती ॥

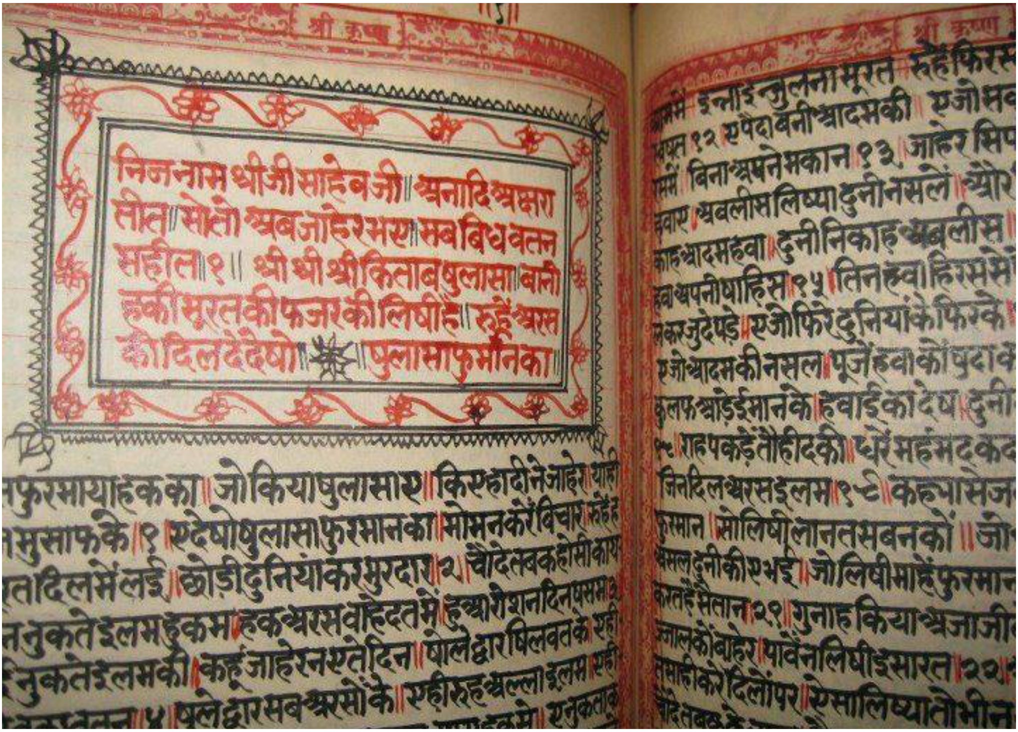
उपरोक्त श्लोक विजयाभिनंद बुद्धजी या प्राणनाथ की महिमा गाते हैं, उन्हें प्रेम से भजने से शाश्वत सुख, आनंद मिलेगा और दुष्ट बुद्धि का नाश होगा...त्रिपुरार; भगवान शिव अपनी सेना के साथ, भगवान ब्रह्मा अपने चार सिरों से 4 वेदों का उच्चारण कर रहे हैं, भगवान विष्णु और धर्मराज 'जय जय' कहकर प्राणनाथ की स्तुति कर रहे हैं, इंद्र, वरुण, नारद मुनि, गंधर्व; दिव्य नर्तक, देवता और दानव सभी परम भगवान 'प्राणनाथ' की शरण में आ गये हैं ।

सनकादिक; सनक, सनंदन, सनातन, संत कुमार सहित भगवान विष्णु द्वारा निर्मित ब्रह्मांड, भगवान ब्रह्मा 'अविनाशी प्राणनाथ' की पूजा करते हैं । 4 संप्रदाय हैं श्री संप्रदाय, माधव, रुद्र और निंबार्क । चार आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास । चार वर्ण हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । अरहंती, दत्तात्रेय, दसनामी संप्रदाय, अद्वैत वेदांत परंपरा और अन्य महंत, जो कर्म-कांड, उपासना, वेदांत शिक्षा से संबंधित हैं । जो लोग दर्शन सम्प्रदाय, शास्त्रभेदी, बहत्तर फिरके अथर्ववेदी के हैं, वे सभी प्राणनाथ की महिमा के रूप में यह आरती गा रहे हैं ।

इसके बाद महामती की महिमा और सत्य की स्थापना हुई, जिससे सभी झूठ दूर हो गये । हम देख सकते हैं की प्रणामियों के 'इष्टदेव' प्राणनाथ हैं, कृष्ण नहीं, बल्कि हर संप्रदाय की तरह प्रणामियों का भी एक मंत्र है, जिसे 'तारतम मंत्र' कहा जाता है । मंत्र के बीच विरोधाभास है क्योंकि प्रणामियों का मानना है कि यह 'निजनाम श्रीकृष्णजी अनादि अक्षरातीत' है, लेकिन निजानंदियों का मानना है कि यह 'निजनाम श्रीजीसाहेबजी अनादि अक्षरातीत' है। इसलिए ‘कुलज़म शरीफ़’ पर शोध करने के बाद मैंने उनके मंदिर का दौरा करने का फैसला किया और पाया कि दोनों तारतम का उपयोग अलग-अलग संदर्भों में किया जाता है ।'कृष्णजी मंत्र' का प्रयोग हिंदुओं के धर्म परिवर्तन के लिए किया जाता था, 'साहेबजी मंत्र' का प्रयोग मुसलमानों के लिए किया जाता था ।

लेकिन जो चित्र पन्ना के बंगला साहेब में रखे 'कुलज़म शरीफ़' में मिला उसमें हम 'निजनाम श्रीजीसाहेबजी अनादि अक्षरातीत' मंत्र देख सकते हैं ।

अगले पेज पर दिए चित्र में सबसे ऊपर 'श्रीकृष्ण' भी लिखा हुआ है, जो केवल इस्लामी पहचान छिपाने के लिए है । नीचे आप आदम, इब्लीस, निकाह, फिरके, फरमान, तौहीद, लानत, इलम, महमंद जैसे शब्द पढ़ सकते हैं, क्या ये शब्द यह बताने के लिए पर्याप्त नहीं हैं कि वे न तो हिंदू हैं और न ही कृष्ण के भक्त ।



जैसा कि मैंने पहले भी बताया था कि उन्हें 1942 में नेपाल में एक कोर्ट केस लड़ना पड़ा था । उस केस को जीतने के लिए नेपाल प्राणनाथ मंदिर के मुख्य पुजारी ने तारतम मंत्र 'निजनाम श्रीजीसाहेबजी' से बदलकर 'निजनाम श्रीकृष्णजी' कर दिया । उन्होंने 'क़ुलज़म शरीफ़' से उस हिस्से को भी हटा दिया जिसमें कुरान की बातें की गयी हैं, ऐसा करना आसान था क्योंकि 1965 तक प्रणामियों अपने ग्रंथों को प्रिंट नहीं करवाते थे । संप्रदाय के लोगों के पास केवल हस्तलिखित ग्रन्थ ही उपलब्ध थे । मैं पहले भी बता चुका हूँ की उनकी एक संध्या प्रार्थना है 'मेहर सागर', जहां वे 'मुहम्मद और अल्लाह' की महिमा गाते हैं लेकिन उसमें 'कृष्ण' का नाम नहीं है ।

इसके अलावा एक गुप्त प्रार्थना भी है, जिसे आजकल प्रणामियों और निजानंदियों ने अपनी वास्तविक पहचान उजागर होने के डर से गाना बंद कर दिया है । अब वे केवल धन की समस्या या दुश्मनों से छुटकारा पाने के लिए इस प्रार्थना को गाते हैं ।

इसे 'दुआ ए गंजुल अरश' कहते हैं । मैं केवल कुछ पंक्तियों का हिंदी अनुवाद दे रहा हूं क्योंकि यह बहुत लंबा है.....

दुआएं गंजुल अर्श शुरु अल्लाह के नाम से,

जो बड़ा मेहरबान निहायत रेहम करने वाला है ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है जात बादशाह निहायत पाक ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है ग़ालिब बिगाड़ का सुधार करने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है बख्शने वाला निहायत रहम वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है जोरावर वायदा वफ़ा करने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है बारीक बीन खबरदार ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है बख्शने वाला बहुत दोस्त रखने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है कारसाज़ ज़िम्मेदार कामों का ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है हमेशा रहने वाला कायम ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है जिन्दा करने वाला मारने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है जिन्दा अपनी जात से कायम ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है पैदा करने वाला, दुरुस्त करने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है आलिशान अजमत वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है अमन देने वाला निगाहबान ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है काफी और हाजी नाज़िर ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है बुर्दबार बख्शने वाला ।

नहीं कोई माबूद सिवा अल्लाह के पाक है रेहमत करने वाला एहसान करने वाला ।

आदम अल्लाह का सफी है । अल्लाह का नजी वाला है ।

इब्राहिम अल्लाह का खलील है । इस्माइल अल्लाह का जबीह है ।

मूसा अल्लाह का कलीम है । दाऊद अल्लाह का खलीफा है ।

ईसा अल्लाह की रुह है । मुहम्मद अल्लाह तआला के रसूल हैं ।

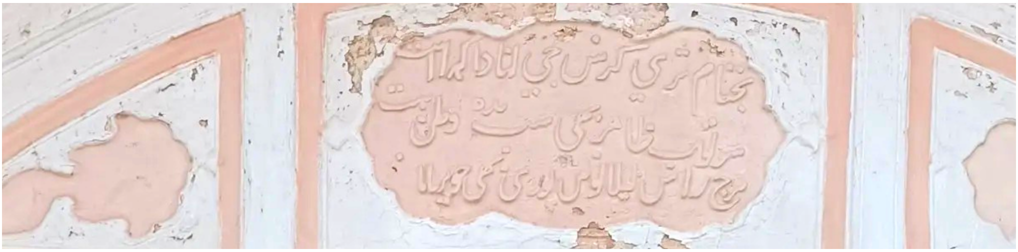
और अल्लाह की रहमत उसकी मख्लूक में से बेहतरीन खल्फ पर हो जो उसके अर्श का नूर और तमाम खूबियों और अफ़ज़ल हैं । जो हमारे हबीब और हमारे सरदार और हमारे सहारे और हमारे शफी और हमारे आका मुहम्मद हैं । और आपकी तमाम औलाद और तमाम साथियों पर भी रहमतें हों, ऐ रहम करने वालों में सबसे ज्यादा रहम करने वाले अपनी रहमत से हमारी दुआ कबूल फ़रमा ।

इन सभी वाक्यों का मतलब है कि इस दुनिया में हर चीज़ अल्लाह द्वारा बनाई गई है, उसके अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है, और मुहम्मद अल्लाह के संदेशवाहक हैं ।

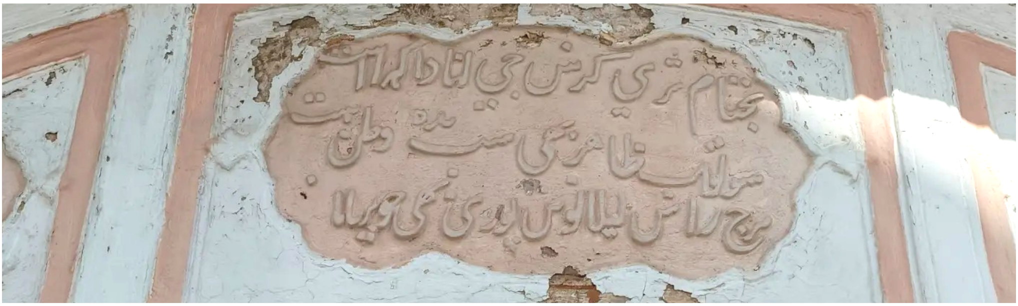
अंतिम लाइन ही कलमा भी है; **ला इलाहा इल्ललललाह, मुहम्मद रसूलुललाह** जिसे प्राणनाथ ने सुना और फिर इस्लाम कबूलने का फैसला किया । तो हम समझ सकते हैं सम्पूर्ण प्रार्थना ‘अल्लाह’ की महिमा गाती है, यह 'प्रणामियों और निजानंदियों' के मुसलमान होने का एक पुख्ता सबूत है ।

इसके अलावा बहुत से सबूत हैं जो उनकी इस्लामी पहचान बताते हैं, उनमें से एक पन्ना मंदिर की वास्तु-कला है । जिसे 'श्री 5 पद्मावती पुरी धाम या अनंत श्री प्राणनाथ जी का मंदिर' के नाम से जाना जाता है, इसे पहले '**दरगाह ए मुक़द्दस**' नाम से जाना जाता था ।

मंदिर की दोनों मेहराबों के बीच में यह शब्द फ़ारसी लिपि में लिखे हैं “**दरगाह-ए-मुक़द्दस हज़रत आखरुल इमाम मुहम्मद महदी साहिबुजमाँ**” जहां प्राणनाथ को उनकी मृत्यु के बाद मुस्लिम रीति से दफनाया गया था । तथा अंदर की मेहराब मे पुनः फ़ारसी लिपि में लिखा है "निजनाम श्री कृष्ण जी, अनादि अक्षरातीत” । अंदर की मेहराब में पुनः फ़ारसी लिपि में लिखा है "**मुख़्तार-ऐ-हिन्द विजयाभिनंद नेहकलंक अवतार**" अर्थात कल्कि अवतार । तथा पिछले दरवाजे की मेहराब पर फ़ारसी लिपि में लिखा है “**मुहम्मद, अली, महदी, ईसा व रुहें भी आए**" ।

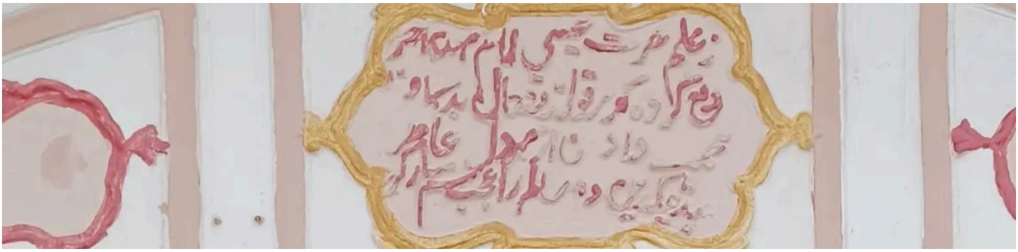






दूसरी तस्वीर में फ़ारसी शब्दों को पीले रंग से हाईलाइट किया है, क्यूंकि इन पर आसानी से किसी का ध्यान जाता नहीं है । मंदिर को अभी भी कुछ लोग 'दरगाह' कहते हैं, यह प्रणामी और निजानंदी संप्रदाय में एक महत्वपूर्ण मंदिर है । यहाँ वो मुसलमान भी आते हैं जो प्राणनाथ को 'इमाम मेहंदी' के रूप में मानते हैं ।

इसके अलावा पिछले दरवाजे की मेहराब पर **"जइल्म शर्त ईसा, इमाम महदी आख़रुल जमाँ, दफः दज्जाल कर्दः कौसर क़ौल हाल बरसार व मुहम्मद दादा अज हम दिल आहद शद मी करीन व साकम श मुजब शम सारम"** लिखा है ।

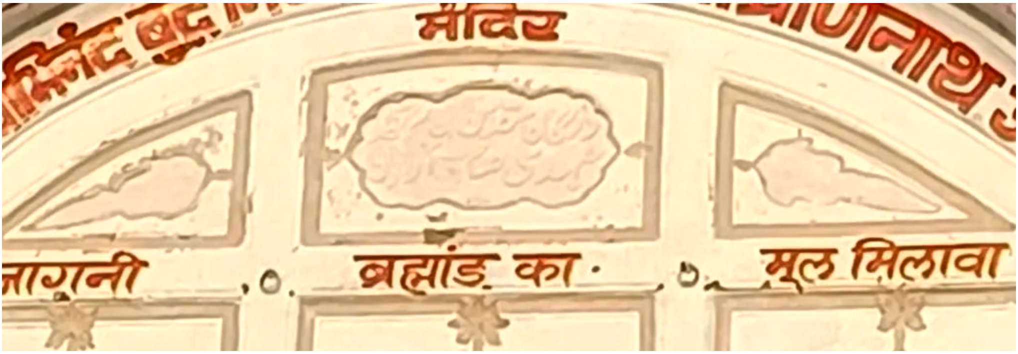


अर्थात: अपने वचन के अनुसार पुनः **ईसा रूहल्लाह, आखरूल ज़माँ इमाम मुहम्मद महदी साहिबुज़्ज़माँ** ने संसार में प्रकट होकर अज्ञानता रूपी दुष्ट दानवता को नष्ट करके अनंत शाश्वत प्रेम द्वारा मोक्ष प्रदान कर दिया एवं मुहम्मद साहिब के पवित्र वचन के अनुसार परमधाम के कौसर तालाब के शीतल, मधुर सुगंधित आनन्ददायक जल अर्थात अलौकिक बह्मज्ञान निधि रूपी तारतम्य (तारतम) को भौतिक जगत में हमें रसपान करा रहे हैं ।



तस्वीर में गुम्मट जी के दक्षिण दिशा में ऊपर फ़ारसी लिपि में लिखा है ।
हक़ हक़ हक़ बा रोज़ जुमा दो घड़ी, शब आख़िरी साज़ दहम यक हज़ार यक सद सष साल हिजरी (1106) सत्ताईस (27) तारीख़ माह मुर्हरम, विसाल-ए-महबूब कर्दः शुद, कमतरीन खाकसारी लिखतंग । अर्थात: सत्य सत्य सत्य "हिजरी सन 1106 में मुर्हरम माह की सत्ताईसवीं 27 तारीख को शुक्रवार की रात के दो घड़ी बाकी रहने ब्रह्ममुहूर्त प्रातः काल में श्रीजी अंतर्ध्यान हुए ! यह चौपाई यही साबित करती है की प्राणनाथ को मुस्लिम रीति के अनुसार दफनाया गया था ।

पहली तस्वीर में फ़ारसी भाषा में ही कलमा लिखा है "**ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह, सल्ललाहु अलैहि व सल्लम**” । इसके अलावा बाहर से भी पन्ना मंदिर किसी इस्लामी मस्जिद या दरगाह जैसा दिखता है । ऊपर की दो तस्वीरें अनंत श्री प्राणनाथ मंदिर, पन्ना की हैं और नीचे की दो तस्वीरें शिया मस्जिद 'इमामज़ादेह सालेह', ईरान की हैं ।











दोनों रचनाओं में इतनी समानताएं हैं कि यह विश्वास करना मुश्किल है कि वे अलग-अलग धर्मों के हैं ।

अब हाथ का चिन्ह 'पंजतन पाक' नजफ, इराक से लिया गया है, चित्र नीचे है । तो पन्ना मंदिर की वास्तुकला ‘इमामज़ादेह सालेह और नजफ़’ दोनों से प्रेरित है ।





प्राणनाथ के एक शिष्य लक्ष्मी दास पन्ना मंदिर की दीवारें 'सोने' से बनाना चाहते थे, लेकिन प्राणनाथ ने उन्हें यह कहते हुए रोक दिया कि भविष्य में लोग मंदिर से सोना लूट सकते हैं या फिर नजफ़ से 'समानता' छुपाने के लिए ऐसा किया होगा ।





एक बार के लिए हम इस बात को नजरअंदाज कर सकते हैं कि वास्तुकला में समानता एक संयोग हो सकती है ।

लेकिन हम यह कैसे नजरअंदाज करें कि अगर वे हिंदू हैं तो मृतक को दफनाते क्यों हैं? प्राणनाथ को भी मरने के बाद दफनाया गया था? ऊपर महारानी जी के मंदिर में मौजूद ‘समाधियों’ की फोटो है, नीचे नजफ, इराक की ‘कब्रों’ की फोटो है ।





इन तस्वीरों में इतनी समानता कैसे है ? अगर वे हिंदू हैं तो फिर हिंदु परंपरा से अंतिम संस्कार क्यों नहीं करते? अपने शोध से मैंने पाया कि 1947 से पहले सभी प्रणामियों को मृत दफनाया जाता था, लेकिन उसके बाद केवल पन्ना में रहने वाले लोगों को ही दफनाया जाता है । अन्य जगहों पर उन्हें अग्नि में ही जलाया जाता है, लेकिन अस्थियां अर्थात 'फूल' पन्ना में दफन करते हैं ।

पर्याप्त फोटो सबूत इकट्ठा करने के बाद मैंने सत्यता जांचने के लिए पन्ना मंदिर में भक्तों के साथ बातचीत करने का फैसला किया । जब मैंने बड़े-बुजुर्गों से इस्लामी पहचान के बारे में पूछा गया तो उन्होंने मुझे 'खा जाने वाली नज़रों' से देखा, लेकिन फिर एक युवा ने 'पहचान गुप्त रखने' की शर्त पर मेरी मदद करने का फैसला किया ।

उन्होंने मुझे बताया कि प्रणामियों या निजानंदियों को हिंदू और मुस्लिम दोनों का संप्रदाय माना जा सकता है । तब मेरा पहला सवाल यह था कि आप कैसे हिंदू हैं जब आप शिव, विष्णु, राम, दुर्गा आदि में भी विश्वास नहीं करते हैं ? यहां तक की आपकी कृष्ण भक्ति भी 11 साल और 52 दिनों तक सीमित है ?

उन्होंने कहा क्योंकि हम प्रणामियों और निजानंदियों के लिए 'राजजी या प्राणनाथ' सर्वोच्च हैं, कृष्ण नहीं । हम कृष्ण की पूजा क्यों करेंगे क्यूंकि क़ुलज़म शरीफ़ में साफ़ लिखा है:

श्रीप्राणनाथ निजमुलपति श्रीमेहेराज सुनाम ।
तेजकुंवर श्यामा युगल को पल-पल करुँ प्रणाम ॥

हर आत्मा का शाश्वत पति ‘प्राणनाथ’ है, उसका एक नाम मेहराज है । मैं दिव्य युगल स्वरुप 'राज-श्यामा जी' को बार-बार नमन करता हूँ ।

तो क्या राजजी और कृष्ण एक ही हैं?

क़ुलज़म शरीफ़ में कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि राजजी ही कृष्ण हैं, वास्तव में वह प्राणनाथ हैं जिन्हें कई बार राजजी कहा गया है । लोग सोचते हैं कि श्यामा भी राधा का नाम है, इसलिए राज-श्यामाजी ही राधा-कृष्ण भी हैं, लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि पूरे कुलज़म स्वरूप में ऐसा कोई श्लोक नहीं है जिसमे लिखा हो की 'परमधाम' में कृष्ण रहते हैं । राजजी के श्रृंगार में भी ‘बांसुरी, मोर पंख’ का कोई जिक्र नहीं है और न ही राजजी ‘पीतांबर’ पहनते हैं ।

फिर आप कृष्ण को 'अक्षरातीत' क्यों कहते हैं?

उन्होंने कहा कि यह भ्रम तारतम मंत्र 'निजनाम श्रीकृष्ण जी अनादि अक्षरातीत' के कारण है, जिसे जपते समय भक्त सोचते हैं कि कृष्ण ही अक्षरातीत हैं। लेकिन रास ग्रंथ में स्पष्ट उल्लेख है कि जब तक 'राजजी या प्राणनाथ' कृष्ण के शरीर में बैठकर लीला कर रहे थे तभी तक कृष्ण को अक्षरातीत कहते हैं, उसके बाद वह 'विष्णु' कृष्ण हैं। 'बीतक ' में भी प्राणनाथ को कई बार राज, अक्षरातीत, हक और धनी कहा गया है, परंतु कहीं भी उन्हें 'कृष्ण' नहीं कहा गया है।

तो फिर प्रणामी क्यों कहते हैं कि कृष्ण, राज और प्राणनाथ एक ही हैं?

इसका कारण यह है कि वे प्राणनाथ के प्रकटन का वास्तविक अर्थ समझ नहीं पाये हैं। यह श्लोक वही बताता है:

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान॥
किरन्तन 52.25

विष्णु के कृष्ण अवतार के कारण 'राजजी' की लीला का रहस्य छुप गया। स्वयं को मूल रूप में प्रकट करने के लिए ही वे इस कलियुग में प्राणनाथ के रूप में आए ताकि हर कोई इस सत्य को समझ सके कि 11 वर्ष और 52 दिन तक के कृष्ण वयस्क 'द्वारकाधीश कृष्ण' से भिन्न हैं।

फिर उन्होंने मुझे कुछ सिद्धांत बताये जिनका पालन हर 'प्रणामी और निजानन्दी' भक्त को करना होता है:

1. कोई भी जप, तप, उपवास या कर्मकांड न करें।
2. प्राणनाथ के अतिरिक्त किसी को भी पूर्ण परमात्मा नहीं मानना चाहिए।
3. क़ुलज़म स्वरूप और बीतक साहिब ही एकमात्र धर्मग्रंथ हैं, जिन्हें हमें पढ़ना चाहिए।

4. श्री राज श्यामा जी के अलावा कोई भी पूजा के योग्य नहीं है ।
5. हमें किसी अन्य समुदाय या संप्रदाय के प्रसाद और चरणामृत का सेवन नहीं करना है, क्योंकि एक पत्नी केवल अपने पति का झूठन ही खाती है ।
6. हमें शुद्ध शाकाहारी भोजन ही खाना चाहिए ।
7. तम्बाकू, शराब या किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन न करें ।
8. 'जागो और जगाओ' के सिद्धांत का पालन करें ।
9. केवल महामति प्राणनाथ कृत क़ुलज़म स्वरुप के पाठ का आयोजन करना चाहिए ।

इसके बाद मैंने उनसे पूछा, यदि आप प्राणनाथ के भक्त हैं जो की हिंदू थे, तो फिर वह इमाम मेहंदी होने का दावा क्यों करते हैं ? तथा अन्य हिंदू देवताओं का अपमान क्यों करते हैं ? क्या प्राणनाथ ने इस्लाम अपना लिया था ?

उन्होंने कहा कि प्राणनाथ केवल तब तक इमाम मेहंदी होने का दावा करते हैं, जब तक वह औरंगजेब की 'जागनी' करना चाहते थे, अन्यथा वह एक हिंदू थे और मुसलमानों से नफरत करते थे । लेकिन जब मैंने उन्हें उनकी इस्लामी पहचान और अरबी में लिखे 'अखरुल इमाम मेहदी उज़ ज़म्मान' के सबूत दिखाए और महारानी जी के मंदिर में 'समाधी रूपी शिया कब्रों' के बारे में बताया तो उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ स्वीकार कर लिया कि वे मुसलमान हैं और प्राणनाथ की हिंदू पहचान अपनी इस्लामी पहचान को छिपाने के लिए एक छद्म आवरण थी ।

यही कारण है कि पन्ना के अलावा दूसरी जगहों पर अन्य हिंदू समुदायों द्वारा अस्वीकार किए जाने के डर से प्रणामी अपनी ‘इस्लामी पहचान’ स्वीकार करने से डरते हैं । उनके मंदिरों में भी प्रसाद और चरणामृत होता है, पुजारी भी अन्य हिंदू पुजारियों की तरह केसरिया और सफेद कपड़े पहनते हैं और तिलक भी लगाते हैं, प्राणनाथ भी तिलक लगाता था ।

केवल पन्ना मंदिर की वास्तुकला इस्लामी है, क्योंकि इसे प्राणनाथ के जीवनकाल के दौरान बनाया गया था । दूसरे शहरों में मंदिर अन्य हिंदू मंदिर की तरह दिखते हैं, लेकिन गुंबद के ऊपर 'पंजतन पाक' चिन्ह होता है । इसलिए यदि हम इन सभी पहलुओं को नजरअंदाज कर दें तो यह कहना मुश्किल नहीं है कि वे मुसलमान हैं ।

इस शोध से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है ?

क़ुलज़म शरीफ़ की 'रास और प्रकाश' पुस्तकें पढ़ते समय ऐसा लगता है कि प्रणामी श्रीकृष्ण के भक्त हैं, परंतु मुझे कहीं भी ऐसा श्लोक नहीं मिला कि प्राणनाथ श्रीकृष्ण की महिमा गा रहे हों ।

इसलिए कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति 11 वर्ष और 52 दिनों के रूप तक सीमित है, क्योंकि तब तक 'राज या प्राणनाथ' की शक्तियां कृष्ण के शरीर से लीला कर रही थीं, और उसके बाद 'गोलोकी' कृष्ण और 'विष्णु' कृष्ण ने लीला की । इसे प्रणामियों में कृष्ण 'त्रिधालीला' नाम से जाना जाता है, जिसके माध्यम से वे कृष्ण और उनकी दिव्य लीलाओं में भेदभाव करते हैं ।

उनके इष्टदेव राजजी और प्राणनाथ हैं, जिन्हें सर्वोपरि मानते हुए पूजा की जाती है क्योंकि वे सभी देवों के देव हैं । प्राणनाथ स्वयं कहते हैं कि उन्हें ही वेदों, पुराणों और अन्य सभी हिंदू धर्मग्रंथों में सर्वोच्च कहा है, बीतक 66.65:

भागवत गीता मिने, और वेद वेदान्त ।
सास्त्र इन वास्ते हुआ, हकें करी सब कर खान्त ॥

वेद, वेदांत, भगवद गीता और अन्य सभी शास्त्र प्राणनाथ के लिए रचे गये हैं । वे सभी उसकी महिमा गाते हैं और उसकी इच्छाएँ पूरी करते हैं ।

इतना ही नहीं प्राणनाथ यह भी कहते हैं कि उन्होंने ही कृष्ण के माध्यम से गीता का संदेश दिया था और गीता सुनाने के बाद 'राज या प्राणनाथ' कृष्ण के शरीर से बाहर निकल आये थे । यानी कृष्ण के शरीर को कठपुतली बना दिया है, जिसमें कोई भी प्रवेश करके लीला कर सकता है और फिर बाहर आ सकता है । यदि यह सत्य है तो यह बात हिन्दू धर्म के अन्य सम्प्रदायों में क्यों नहीं पाई जाती ? व्यास मुनि ने महाभारत और भागवत पुराण लिखते समय 'राज या प्राणनाथ' के विषय में क्यों कुछ नहीं लिखा ? आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य और निम्बाराचार्य जैसे किसी भी जगद्गुरु ने 'राज या प्राणनाथ' के बारे में कुछ क्यों नहीं कहा? वस्तुतः व्यास मुनि ने स्वयं महाभारत के अंत में, भविष्य पर्व, 3.132.45 में लिखा है:

वेदे रामायणे पुण्ये भारते भरतर्षभ ।
आदौ चान्ते च मध्ये च हरिः सर्वत्र गीयते ॥
हे महान भारत ! वेद, रामायण और पवित्र महाभारत के आदि, मध्य और अंत में श्री हरि की महिमा गाई गई है ।

यह श्लोक 'श्री हरि' के बारे में बता रहा है यानी विष्णु, राम, कृष्ण, लेकिन 'प्राणनाथ' हरि नहीं हैं । वह हरि कैसे हो सकता है, जब वह विष्णु से इतनी नफरत करता है की उन्हें अज़ाज़िल 'शैतान' कहकर बुलाता है । उसके बाद कृष्ण गीता 15.15 में कहते हैं:

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥
मैं सभी प्राणियों के हृदय में स्थित हूं और मुझसे स्मृति, ज्ञान और विस्मृति आती है । मैं ही समस्त वेदों से जानने योग्य, वेदान्त का रचयिता तथा वेदों के अर्थों को जानने वाला हूँ ।

तो प्राणनाथ का यह दावा भी झूठा है !

बाद में प्राणनाथ 'कल्कि या निष्कलंक अवतार' होने का दावा करते हैं । यदि ऐसा था तो कलियुग का अंत क्यों नहीं हुआ? यदि प्राणनाथ कल्कि थे तो उन्होंने मुगल राजा औरंगजेब से युद्ध क्यों नहीं किया?

आइये देखते हैं श्रीमदभागवतम में 'कल्कि' के बारे में क्या लिखा है:

सम्भलग्राममुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।

भवने विष्णुयशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥

कल्कि का जन्म संभल ग्राम में 'विष्णुयशा' नामक ब्राह्मण के घर होगा, जो उदार हृदय वाले विष्णु भक्त होंगे ।

लेकिन प्राणनाथ का जन्म गुजरात के जामनगर में 'लोहाना राजपूत' परिवार में धनबाई और केशव ठाकुर के घर हुआ था । यदि ऐसी बात है तो प्राणनाथ कल्कि होने का दावा क्यों करते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वह एक 'निज़ारी इस्माइली शिया मुस्लिम' थे और विष्णु का दशावतार विषय उस संप्रदाय में भी मौजूद है, यही कारण है कि वह 'कल्कि और अखरुल इमाम मेहंदी' होने का दावा करते हैं ।

उनकी इस्लामी पहचान को कन्फर्म करने के लिए मैंने शिया समुदाय से संपर्क किया और उन लोगों की एक सूची प्राप्त की, जिन्होंने 'पीर सद्र अल-दीन' वंश में इस्माइल पंथ अपनाया और सिंधी, अरबी और फ़ारसी भाषाओं में इस्लाम के बारे में प्रचार किया, इस **pdf** के पेज नंबर 26 पर लिखा है: ***http://heritage.ismaili.net/node/36941***

> governors (1521-1700), Sind produced many scholars and poets of Sindhi, Arabic and Persian languages, such as Qazi Qadan (1466-1577) of Sehwan, who introduced philosophy and mysticism into Sindhi poetry. He was followed by Shah Karim of Bhulri (1536-1622), Shah Lutfullah Qadri, Shah Inayat Sufi Nasarpoori, Mir Masoom Shah, Makhdoom Nooh of Hala, Lakho Lutafullah, Mahamati Pirannath, Shah Abdul Latif, Sachal Sarmast (1739-1826), Sami Chain Rai, Bedil (d. 1721), etc. Shah Abdul Latif Bhitai (1688-1751) perfected Sindhi poetry both in form and in content and is reckoned as the peerless master of Sindhi verses.

क़ाज़ी क़दान, सहवान (1466-1577)
भुलरी के शाह करीम (1536-1622)
शाह लुत्फुल्लाह कादरी
शाह इनायत सूफी नसरपुरी
मीर मासूम शाह
हाला के मखदूम नूह
लाखो लुत्फुल्लाह
महामति प्राणनाथ
शाह अब्दुल लतीफ
सचल सरमस्त (1739-1826)

ऊपर की लिस्ट में सभी के नाम 'मुस्लिम' हैं, लेकिन प्राणनाथ अपने 'असली' नाम के साथ हैं, ऐसा क्यों है ?

ऐसा इसलिए है क्योंकि जो भी 'निज़ारी इस्माइल' पंथ को अपनाता था, वह अपने पारंपरिक पंथ का पालन करने के लिए स्वतंत्र था । यहां तक कि इमाम के प्रति आस्था और अली के वंशजों के प्रति श्रद्धा के साथ अपना पुराना नाम, जाति, पहचान रखने के लिए भी स्वतंत्र था । इस उदार रवैये को अपनाने से कई जनजातियाँ, जैसे 'लंगाह, सूमरा और लोहाना' इस्माइली सतपंथ की ओर आकर्षित हुईं ।

इसलिए जो कोई भी 'निज़ारी इस्माइल' कन्वर्ट होते थे, उन्हें अपनी मूल पहचान बरकरार रखते हुए इस्लाम का पालन करने की स्वतंत्रता दी गई थी । यही कारण है कि हम सूची में प्राणनाथ का असली नाम देखते हैं ।

यदि हम प्राणनाथ के नाम पर गहराई से गौर करें तो पता चलेगा की उनका पहले नाम 'महामती' का अर्थ 'महान बुद्धि' है, लेकिन इस्लाम में यह 'मुहम्मद' का दूसरा नाम 'महामत है । जो अफ़्रीकी देशों में एक कॉमन नाम है ।

हम यह भी देख सकते हैं कि क़ुलज़म स्वयं ‘कुल्जुम’ से बना है, अरबी में जिसका अर्थ 'लाल सागर' होता है और मोमिन का मतलब ही 'अल्लाह का उपासक' होता है । यदि प्राणनाथ हिन्दू होते तो वे अपनी पुस्तक का नाम 'क़ुलज़म शरीफ़ / स्वरूप' नहीं रखते ।

इसे पढ़ने के बाद भी प्रणामी और निजानंदी कह सकते हैं कि प्राणनाथ मुसलमानों से नफरत करते थे और यह सब मुसलमानों को इस्लाम का वास्तविक अर्थ सिखाने के लिए था, लेकिन फिर वे ऐसा क्यों कहते हैं:

श्री ठकुरानी जी रुहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम ।
सखियां रुहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम ॥
खुलासा 12.53
श्री ठकुरानी जी 'रुहल्लाह' हैं, पैगंबर मुहम्मद 'श्रीकृष्ण / श्याम' हैं । सब सखियाँ दरगाह की 'रुह' हैं, अक्षरब्रह्म की सूरत 'फरिश्ता' है । वह कृष्ण की तुलना मुहम्मद से कर रहे हैं, जबकि मुहम्मद तो अल्लाह के 'संदेशवाहक' थे लेकिन कृष्ण ने तो गीता में स्वयं कहा है की 'मैं भगवान हूँ'। फिर मुहम्मद और कृष्ण एक कैसे हो सकते हैं ?

श्री राज और स्यामा जी, ए दोनों जुगल किसोर ।
रुहें रहें दरगाह में, ए तीनों एक सरुप न और ॥ बीतक 69.42
श्रीराज और श्यामा जी दोनों युगल किशोर हैं, वे दोनों 'रुहों' के साथ 'दरगाह' में रहते हैं, ये तीनों एक ही रुप हैं ।

निजानंदियों का कहना है की 'दरगाह' परमधाम को कहते हैं, लेकिन 'दरगाह' एक इस्लामी शब्द है जिसका इस्तेमाल 'पीर या इमाम की कब्र' के लिए किया जाता है । परमधाम में ‘हौज़ कौसर’ नामक ऐसा तालाब है जिसका पानी दूध से भी ज्यादा सफेद, शहद से भी ज्यादा मीठा और कस्तूरी से भी ज्यादा खुशबूदार है । लेकिन ढूंढने पर पता चला कि 'हौज़ कौसर' मुसलमानों की जन्नत में स्थित है ।

इससे साबित हो जाता है कि पन्ना का मंदिर वास्तव में प्राणनाथ या इमाम मेहंदी की 'कब्र' है जिसे दरगाह ए मुक़द्दस कहा जाता है ।

यदि दरगाह परमधाम है तो 'कृष्ण' के निवास को परमधाम क्यों कहते हैं ?

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ भगवद गीता 15.6
श्रीकृष्ण कहते हैं ना तो सूर्य, ना चन्द्रमा और ना ही अग्नि मेरे 'परमधाम' को प्रकाशित कर सकते हैं । वहां पहुंचने के बाद व्यक्ति दोबारा इस भौतिक संसार में नहीं लौटता ।

परन्तु उस परमधाम का नाम क्या है ? जिसे ब्रह्माजी, ब्रह्म संहिता के 43वें श्लोक में बताते हैं:
गोलोक नाम्नि निजधामनि तले च तस्य देवी-महेश-हरि-धामसु तेषु तेषु ।
ते ते प्रभावनिचया विहिताश्च येन गोविंदमादिपुरुषम तमहं भजामि ॥
आध्यात्मिक आकाश में गोलोक है, जो श्रीकृष्ण का निजधाम अर्थात 'परमधाम' है । उस आकाश में नारायण, शिव, दुर्गा आदि के लोक भी है । मैं आदिपुरुष भगवान गोविन्द 'श्रीकृष्ण' को भजता हूँ, जिनके ऐश्वर्य की महिमा से ही यह संभव है । इसलिए भगवान के विभिन्न रूपों राम, विष्णु, शिव और दुर्गा के निवास को भी 'परमधाम' कहा जाता है ।

भागवत पुराण और वेदों जैसे महान ग्रंथों को पढ़ने के बाद ही प्राणनाथ ने दिव्य ज्ञान प्राप्त किया, लेकिन उसे पढ़कर लोगों शिक्षा देने के बजाय उसने स्वयं को सर्वोच्च सिद्ध करने के लिए शास्त्रों का ‘अर्थ से अनर्थ’ कर दिया ।

एक बार के लिए हम इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि क़ुलज़म शरीफ़ में इस्लामी तत्वों का प्रयोग इसलिए हुआ क्योंकि प्राणनाथ मुसलमानों को इस्लाम का वास्तविक अर्थ बता रहे थे । जिससे की वे हिंसा का मार्ग छोड़ दें । यदि ऐसा था तो उसने औरंगजेब को क्यों नहीं रोका जब वह मथुरा और जगन्नाथ मंदिर को तोड़ने का आदेश दे रहा था, जबकि वे तो कृष्ण के ही मंदिर हैं ?

उसने हिंदुओं के ‘धर्म परिवर्तन’ को रोकने के लिए क्या किया, जिन्हें ज़ज़िया देने के लिए मजबूर किया जाता था ? उन मुसलमानों को क्यों नहीं रोका जिन्होंने बहुत सी महिलाओं के साथ बलात्कार किया ? अंततः यदि प्राणनाथ कल्कि थे तो उन्होंने मुगलों से युद्ध क्यों नहीं किया ? प्राणनाथ के जीवनकाल में ही कलियुग का अंत क्यों नहीं हुआ ? यदि वह कल्कि था तो उसका घोड़ा 'देवदत्त' कहाँ था ? क्यों वह औरंगज़ेब को 'दीन इस्लाम' कबूल करवाने पर तुला हुआ था और उसे 'सकुमार सखी' कहता था?

ऐसा इसलिए है क्योंकि प्राणनाथ ने स्वयं कहा है कि वह न तो कोई संत हैं और न ही वैष्णव, बल्कि वह निज़ारी इस्माइली शिया संप्रदाय से इमाम मेहंदी था । उस समय में 'इस्माइलिज़्म' का पालन गुप्त रूप किया जाता था इसलिए हमें निज़ारी इस्माइली शब्द का सीधा उल्लेख नहीं मिलता है, लेकिन मुझे लगता है कि 'निजानंदी' शब्द निज़ारी + आनंद का मिश्रण है ।

अगर प्रणामी और निजानंदी अभी भी अपनी मुस्लिम पहचान को लेकर भ्रमित हैं तो यहां 'राग नवखंडो आरती' से ही एक और प्रमाण है:

आये षटदर्शनी षट शास्त्रवेदी, बहत्तर फिरके आये अथर्ववेदी ॥

इसमें अर्थववेद से आए बहत्तर फ़िरकों के बारे में बताया गया है, बिना इस्लाम कबूल किये उन्हें “72 फ़िरके; हनफ़ी, शैफ़ी, मलिकी, सूफ़ी, वहाबी, देवबंदी, बरेलवी, सल्फ़ी, इस्माइली, बोहरा, दाऊदी, खोजा, दूज़, अहमदिया इत्यादि” के बारे में कैसे पता चला ? क्योंकि उस समय जो निज़ारी इस्माइल का पालन करते थे उन्हें ‘अर्थववेदी’ भी कहा जाता था, लेकिन इसका हिन्दुओं के 'वेद' से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

प्राणनाथ शिया निज़ारी 'इस्माइली' से ताल्लुक रखते थे जिसमें 'खोजा' के भी अंश मिलते हैं, क्योंकि उनके समय में खोजा गुप्त रूप से इस्लाम का पालन करते थे और इस संप्रदाय में भगवान विष्णु का 'दशावतार' विषय भी मौजूद है । इसलिए जब प्राणनाथ 'कल्कि या निष्कलंक अवतार' होने का दावा करते हैं...

तो यह बात खोजा मुसलमानों में भी है, जिनकी उत्पत्ति भारत के गुजरात में हुई थी और प्राणनाथ का जन्म भी गुजरात में हुआ था । 'खोजा' शब्द फारसी शब्द 'ख्वाजा' से लिया गया है, लोहाना से 'निज़ारी इस्माइली' में कन्वर्ट हुए लोगों को भी ‘खोजा’ कहते हैं, हम जानते हैं कि प्राणनाथ भी जन्म से लोहाना राजपूत थे । इसलिए प्राणनाथ का एक मुस्लिम होना और हिंदू नाम रखते हुए इस्लाम के प्रचार करने में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए । इसी कारण प्राणनाथ की मृत्यु के बाद उनके 5000 शिष्यों में से कुछ अपने मूल धर्म में लौट आए, यहां तक कि छत्रसाल से भी हिन्दू राजाओं ने वैदिक धर्म की मूल शिक्षाओं पर लौटने का अनुरोध किया ।

इसके बाद प्रणामियों ने खुद को हिंदू-वैष्णव दिखाने के लिए अपने धर्म में बदलाव करने शुरू कर दिये । उन्होंने भगवान विष्णु की आरती 'ओम जय जगदीश हरे' से प्रेरित होकर एक आरती बनाई:

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी, स्वामी तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥
....ॐ जय जगदीश हरे ॥

अब प्रणामियों की 'आरती':

श्री प्राणनाथ भज रे, स्वामी प्राणनाथ भज रे,
ब्रह्मसृस्टि के कारण, सुन्दर रूप धरे, श्री प्राणनाथ भज रे ।
सचिदानंद परमात्मा, पूर्ण ब्रह्मभरता, अक्षर ब्रह्म पुजारी,
.....आप हो कृपा के सागर, कृपा करो स्वामी, अपना साथ उभारो,
अपने चरण लगाओ, तुम अन्तर्यामी, श्री प्राणनाथ भज रे ।

आप दोनों को एक ही राग में गाइये, मेरी बात समझ में आ जाएगी !

उन्होंने श्रीराम तारक मन्त्र को '**श्रीराम जय राम जय जय राम**' से बदलकर '**श्रीराज जय राज जय जय राज**' कर दिया ।

खुद को हिंदू दिखाने के लिए उनके पुजारियों ने सफ़ेद से भगवा पोशाक पहननी शुरू कर दी, 'मोमिन' अब सुंदरसाथ बन गए, 'अज़ान' अब आरती बन गयी, 'मजलिस' को चर्चा कहा जाने लगा, लेकिन पन्ना में इसे अभी तक मजलिस ही कहा जाता है ।

अब खुद को कृष्ण के भक्त दिखाने के लिए, उन्होंने एक नया नाम 'श्री कृष्ण प्रणामी' अपनाया जो महाभारत, शांति पर्व 12.47.92 से लिया गया है:
एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः ।
दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥
एक बार कृष्ण को प्रणाम करने का फल 10 अश्वमेघ यज्ञ करने के बराबर है । इन यज्ञों को करने से तो पुनर्जन्म होता है, लेकिन जो कृष्ण को प्रणाम करते हैं वह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाते हैं ।

नमो नरकसंत्रासरक्षामण्डलकारिणे ।
संसारनिम्नगावर्ततरिकाष्ठाय विष्णवे ॥ 12.47.94
मैं उन भगवान विष्णु को प्रणाम करता हूँ जो रक्षामंडल बनाकर नरक से सबकी रक्षा करने वाले, और लकड़ी की नाव की तरह तूफानों से बचाने वाले हैं ।

इस श्लोक में कृष्ण को 'विष्णु' कहा गया है, लेकिन प्राणनाथ ने 'कुलज़म शरीफ़' में विष्णु को 'शैतान' कहा है । वैसे तो प्रणामी 11 वर्षों और 52 दिनों से बड़े कृष्ण में विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन खुद को उनका भक्त साबित करने के लिए 'महाभारत' से भी श्लोक उठा लेंगे । अतः इस परिवर्तन के बाद उनके अधिकांश मंदिरों के नाम **श्रीकृष्ण प्रणामी मंदिर, श्रीकृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर, सूरत** इत्यादि ऐसे दिखते हैं ।

जब उनसे 'कृष्ण प्रणामी' के पीछे का कारण पूछो तो यह उत्तर मिलता है: “हम कृष्ण को प्रणाम करते हैं इसलिए कृष्ण प्रणामी हैं!” दुख की बात है कि वे असली कारण नहीं जानते ।

इसलिए, जब 1965 में कुलज़म स्वरुप का पहला प्रकाशन छपा तो उसे समुदाय के बुजुर्गों का बहुत विरोध का सहना पड़ा, उन्हें यह प्राणनाथ का अपमान लगा । धर्म में किये जा रहे बदलावों को लेकर पुराने सदस्य असहमत थे, वे लोग भारत की आजादी से पहले के दिनों के प्रति उदासीन थे और उन्हें लगता था कि ‘हिंदू रीति-रिवाजों’ के साथ जुड़कर वे अपनी असली पहचान खो रहे हैं ।

इस प्रकार 1980 के दशक के अंत में प्रणामियों के बीच मतभेद शुरू हो गया । प्रचारकों में से एक जगदीश चंद्र ने एक नया समूह बनाया और इसे 'निजानन्दी या इंचोली वाला' नाम दिया, उन्होंने 'मूल धर्म' पर टिके रहने के लिए ऐसा किया था । यह वही जगदीश चंद्र थे जिन्होंने 1983 में प्रणामियों के लिए केस लड़ा था । उन्हें लगा कि वे अपनी पहचान खोकर हिंदुओं के साथ घुलमिल रहे हैं, तथा उनके रीति-रिवाजों मूर्ति पूजा, संकीर्तन आदि को अपना रहे हैं । उनके संप्रदाय में 'मूर्ति पूजन' करना निषेध है ।

फिलहाल यह संप्रदाय दो समूहों में बंटा हुआ है, एक हैं प्रणामी जो 'कृष्ण' को सर्वोच्च मानते हैं और दूसरे निजानंदी जो 'प्राणनाथ' को सर्वोच्च मानते हैं, लेकिन दोनों का मुख्य धर्मग्रंथ कुलज़म स्वरुप ही है ।

आजकल प्रणामी जब नया अनुयायी बनाते हैं, तो कहते हैं कि चर्चा श्रीमद्भागवत पर होगी और पूजा राधा-कृष्ण की करेंगे, लेकिन दीक्षा के बाद चर्चा कुलज़म स्वरुप पर होती है तथा पूजा राज-श्यामाजी की करनी होती है । वे 'जन्माष्टमी' से पहले एक महीने तक 'बीतक चर्चा' आयोजित करते हैं, लेकिन बीतक प्राणनाथ की जीवन यात्रा के बारे में है, इसका भगवान कृष्ण और उनकी लीलाओं से कोई सम्बन्ध नहीं है ।

उनके कथावाचक बीतक की शुरुआत में एक कहानी सुनाते हैं:
एक बार भगवान शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ विंध्याचल पर्वत से होते हुए चित्रकूट भ्रमण के लिए निकले, रास्ते में उन्होंने पन्ना में प्राणनाथ के जन्म से पहले ही एक विशाल शिला को प्रणाम किया । पार्वती के पूछने पर शिव ने कहा - यही वह स्थान है जहां 'पूर्णब्रह्म परमात्मा इंदिरा सखी' अपनी सहचरियों सहित प्रकट होकर निवास करेंगी और संपूर्ण सृष्टि को मुक्ति प्रदान करेंगी । यह विशाल पत्थर 'महालक्ष्मी' हैं; उसने इसे अपने आंसुओं से धोया है और सात कल्पों तक विशाल पत्थर पर बैठकर तपस्या की है ।

महालक्ष्मी की यह कहानी सुनकर पार्वती की जिज्ञासा बढ़ गई और उन्होंने शिव से इसके बारे में विस्तार से बताने को कहा । शिव ने कहा - एक बार विष्णु ध्यान कर रहे थे, तब लक्ष्मी ने उनका ध्यान भंग करते हुए कहा - प्रभु ! आप संपूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं, आपसे ऊपर कोई नहीं है, फिर आप किसका ध्यान कर रहे हैं?

विष्णु बोले - प्रिये ! मैं अपने प्रियतम का ध्यान कर रहा था, जो शाश्वत और अविनाशी पूर्ण पुरुष हैं । लक्ष्मी ने उत्तर दिया - क्या आप पुराण पुरुष नहीं हैं ? विष्णु ने कहा - नहीं प्रिये ! जब सारी सृष्टि महाप्रलय में विलीन हो जाती है, तो मैं भी उसी अविनाशी रूप में गर्भोदक 'क्षीर सागर' में विलीन हो जाता हूँ । मेरे सहित संपूर्ण ब्रह्मांड उनके मन की रचना है ।

यह सुनकर लक्ष्मी जी आश्चर्यचकित हो गईं और उनसे निवेदन किया - प्रभु, कृपया मुझे उस अखण्ड, अविनाशी अक्षर पुरुष का दर्शन कराइये?

विष्णु ने कहा- तुम मुझे संपूर्ण ब्रह्माण्ड में सबसे प्रिय हो, परंतु उस पुरुष और उसके निवास का वर्णन करना मेरे लिए असंभव है । यह सुनकर महालक्ष्मी दुखी हो गईं और उनसे बार-बार अनुरोध करने लगीं, लेकिन विष्णु ने कहा कि वह 'इंद्रावती सखी या प्राणनाथ' के बारे में कुछ भी बताने में असमर्थ हैं ।

तब महालक्ष्मी आंखों में आंसू लेकर चली गईं और एकांत की तलाश में इस घने जंगल में आ गईं । इसी शिला पर बैठकर तपस्या में लीन हो गये। इस प्रकार उन्होंने तपस्या करते हुए 'सात कल्प' बिताये । लेकिन प्रणामियों से जब हिन्दू धर्मग्रंथों से इस कहानी का प्रमाण मांगों, तो वे बता नहीं पाते । इसीलिए यह कहानी भी प्राणनाथ के अन्य दावों की तरह झूठी है !

पूरे डॉक्यूमेंट को पढ़ने के बाद हम समझ सकते हैं कि प्राणनाथ कह रहे हैं कि सभी हिंदू धर्मग्रंथ उनकी महिमा गाने के लिए लिखे गए हैं । लेकिन उन्हें अपनी महिमा का पता तब चला जब उन्होंने महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित ग्रंथ पढ़े । यदि वेदव्यास ने महाभारत, भागवत पुराण और वेदों का संकलन नहीं किया होता तो प्राणनाथ को स्वयं की महानता का कभी पता ही नहीं चल पाता ।

अर्थात व्यास मुनि द्वारा लिखे गए भागवत पुराण को पढ़कर ही प्राणनाथ को 'कृष्ण लीला' का ज्ञान मिला, लेकिन लोगों को गुमराह करने के लिए प्राणनाथ ने उसमें खुद का नाम घुसाकर कहा की उसने ही कृष्ण के माध्यम से 11 वर्ष और 52 दिन तक लीला की थी । वह प्राणनाथ ही था जिसने कृष्ण के तन से 'भगवद गीता' का संदेश सुनाया था । कभी वह खुद को कल्कि अवतार कहता है, लेकिन विष्णु को 'शैतान' कहकर उनका अपमान करता है । फिर वह राजजी, महामती, इमाम मेहंदी, पूर्णब्रह्म और सर्वोच्च ईश्वर होने का दावा करता है ।

यदि प्राणनाथ 'सर्वोच्च ईश्वर' था तो उसे लीला करने के लिए कृष्ण के शरीर की आवश्यकता क्यों पड़ी ? बाद में 'गीता का सन्देश' देने के लिए वह दोबारा कृष्ण के शरीर में घुस गया, लेकिन जब महाभारत का युद्ध लड़ना था तब वह 'कृष्ण' के शरीर से बाहर आ गया ? मतलब भगवान के शरीर को एक कठपुतली बना दिया है ! यदि प्राणनाथ सर्वशक्तिशाली था तो अपने लिए नया शरीर ही बना लेता, लेकिन फिर वह 'कृष्ण' को लेकर झूठे दावे नहीं कर पाता ना ! इसीलिए कृष्ण गीता में कहते हैं:

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ 4.9

मेरा जन्म और मेरा कर्म अर्थात लीलाएँ दिव्य हैं, जो इसे समझ लेता है उसका शरीर छोड़ने के बाद दोबारा जन्म नहीं होता तथा वह मेरे शाश्वत धाम में निवास करता है ।

यदि 'राजजी या प्राणनाथ' ने ही गीता कही थी तो अपना असली नाम 'राज' भी बता देते, अपना वास्तविक रूप भी दिखा देते । लेकिन यह सच नहीं है, क्योंकि गीता में कहीं भी अर्जुन ने कृष्ण को 'राज या प्राणनाथ' नाम से नहीं बुलाया है । जहां भी कृष्ण 'अहम् और माम' कहते हैं, इसका मतलब है कि वह अपने बारे बता रहे हैं, किसी दूसरे या तीसरे व्यक्ति के बारे में नहीं । अब कृष्ण, प्राणनाथ जैसे लोगों के लिए क्या कहते हैं:

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥ 9.11

जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूं तो 'मूर्ख' मुझे पहचान नहीं पाते । क्योंकि वे मुझे 'सभी प्राणियों के सर्वोच्च भगवान' के रूप में पहचानने में सक्षम नहीं होते ।

यदि प्राणनाथ ने ही 'गीता' कही थी, तो वह अपने शिष्यों को 'विश्वरूप' क्यों नहीं दिखा सका, जैसा कृष्ण ने अर्जुन को दिखाया था । भगवान राम ने भी अपने भक्तों को 'विश्वरूप' दिखाया था । प्राणनाथ खुद तो विश्वरूप दिखा नहीं सका और दावा 'राम और कृष्ण' से श्रेष्ठ होने का करता था ।

क़ुलज़म स्वरुप में प्राणनाथ का कहना है कि उसने सभी धर्मग्रन्थ पढ़े हैं, लेकिन फिर भी वो उन सबका असली अर्थ नहीं समझ सका । ऐसा प्रतीत होता है कि प्राणनाथ मानसिक रोग अथवा मिर्गी के दौरों से पीड़ित था, तभी तो उसने 'दिव्य अनुभूति या चौपाई उतरने' के नाम पर बिना सोचे-समझे कुछ भी लिख दिया ।

मुझे प्रणामियों और निजानंदियों पर दया आती है, जो बिना बुद्धि का प्रयोग किये प्राणनाथ की शिक्षाओं को पढ़ते हैं । यदि प्राणनाथ एक 'वैष्णव या कृष्ण भक्त' होता तो उसने ब्रह्मसूत्र, उपनिषद और भगवद गीता का अनुवाद किया होता, उसने हिंदुओं के चार धाम बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम और जगन्नाथ पुरी की यात्रा की होती । तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य महाप्रभु और अन्य भक्ति संतों की शिक्षाओं का अध्ययन किया होता । लेकिन वास्तव में प्राणनाथ ना तो वैष्णव था और ना ही हिंदू, उसका जन्म लोहाना राजपूत के रूप में हुआ था, जिसने बाद में पीर सदरुद्दीन वंश के तहत हब्सा 'इथियोपिया' में इस्लाम में स्वीकार कर लिया । उसने शिया इस्लाम में प्रचलित 'अल तक़्क़िया' के कारण अपने इस्लाम मज़हब को गुप्त रखा, क्योंकि आगा खान के आने से पहले 1978 तक, इस्माइलवाद का पालन गुप्त रूप से ही किया जाता था ।

जैसे मुसलमानों के पास कुरान शरीफ और हदीस है, वैसे ही प्रणामियों के पास ‘कुलजम शरीफ और बीतक’ है। आजकल के प्रणामियों का झुकाव हिंदू धर्म की ओर अधिक है, क्योंकि उन्होंने सबके सामने अपनी इस्लामी रीतियों का अभ्यास करना बंद कर दिया है ।

क्योंकि वे मांस नहीं खाते लेकिन अल्लाह और मुहम्मद की पूजा करते हैं इसलिए 'शाकाहारी मुसलमान' कहकर उनका मजाक उड़ाया जाता है । अब यह सिद्ध हो चुका है कि प्रणामी और निजानंदी वास्तव में निज़ारी इस्माइली शिया परंपरा से मुसलमान हैं ।

लोगों के मन में प्रश्न उठ सकता है, यदि वे मुसलमान हैं तो विभाजन के बाद उन्हें पाकिस्तान क्यों छोड़ना पड़ा ? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे शिया मुसलमान हैं और इस्लाम की शुरुआत से ही शिया और सुन्नी के बीच लड़ाई रही है ।

यदि अभी भी प्रणामी मानते हैं कि प्राणनाथ और कृष्ण एक ही हैं, तो मैं आपको बता दूं कि क़ुलज़म शरीफ़ के अनुसार प्राणनाथ को 226 बार राजजी, 22 बार हक, 28 बार धनी, 12 बार अक्षरातीत कहा गया है, लेकिन 0 बार कृष्ण कहा गया है ।

यदि प्रणामी कृष्ण के भक्त हैं तो वे एकादशी का व्रत क्यों नहीं रखते? वे जनमाष्टमी का व्रत न करके प्राणनाथ के अंतर्ध्यान दिवस का व्रत क्यों रखते हैं? उनके मुख्य ग्रंथ श्रीमद्भागवत पुराण, भगवद गीता और महाभारत क्यों नहीं हैं? उनका संध्या वंदन 'आरती कुंजबिहारी की श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की' क्यों नहीं हैं ? यदि वे हिंदू हैं तो अपने परिवार में मृत्यु के बाद बाल क्यों नहीं मुंडवाते? वे मृतकों की राख को 'हर की पौडी' हरिद्वार में क्यों नहीं बहाते ?

यदि वे कृष्ण भक्त हैं तो उनके तीर्थस्थान मथुरा, वृन्दावन, द्वारका और जगन्नाथ पूरी क्यों नहीं हैं ? इसके बजाय उनके तीर्थ पन्ना, सूरत और जामनगर हैं, जिन्हे 'पद्मावती पुरी धाम, महामंगल पुरी धाम और नवतन पुरी धाम' कहते हैं । जैसे हिंदुओं के लिए हरिद्वार है, मुसलमानों के लिए मक्का है, उसी तरह प्रणामियों के लिए पन्ना है ।

इस डॉक्यूमेंट को पढ़ने के बाद भी यदि आप प्रणामी या निजानंदी संप्रदाय में शामिल होना चाहते हैं तो एक बार फिर सोच लें, आप अन्य हिंदू या इस्लामी संप्रदाय में शामिल हो सकते हैं, लेकिन प्रणामी ना बनें !

क्योंकि ऐसा करने से आपकी हालत 'चमगादड़' जैसी हो जाएगी, जो ना तो जानवर है और ना ही पक्षी लेकिन दोनों उससे नफरत करते हैं । 'चमगादड़' की तरह आप भी ना हिंदू रहेंगे ना मुसलमान ! आप महाविष्णु, शिव या कृष्ण से भी नफरत करने लगेंगे । तो कृपया ऐसा ना करें !

आसान भाषा में कहें तो प्राणनाथ 'क्रिप्टो मुस्लिम' था, जो हिन्दू नाम रखकर अल्लाह-मुहम्मद की भक्ति का प्रचार कर रहा था । वैसे भी हिंदू धर्मग्रंथों में लिखा है कि कलियुग में कई धोखेबाज आएंगे जो खुद के 'भगवान या कल्कि अवतार' होने का दावा करेंगे, लेकिन हमें उन पर विश्वास नहीं करना है ।

योंकि भगवान केवल कलियुग के अंत में विनाश के लिए ही प्रकट होंगे, ज्ञान देने नहीं । प्राणनाथ ने जीवन में एक म्लेच्छ 'मुस्लिम' राजा से युद्ध नहीं लड़ा, लेकिन दावा 'कल्कि' होने का करते थे ।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि इस डॉक्यूमेंट को पढ़ने के बाद इसे दूसरों के साथ शेयर करें, क्योंकि इसे लिखने में मुझे लगभग 2.5 साल लगे हैं और इसने सचमुच मेरे दिमाग का दही कर दिया है । कृपया इसे शेयर करें ताकि अन्य लोगों को भी कृष्ण भक्ति के नाम पर चल रहे 'धोखेबाज़ सम्प्रदायों' के बारे में जागरूक किया जा सके । आप इसे प्रणामियों और निजानंदियों के साथ भी शेयर कर सकते हैं जिससे उन्हें कुछ 'सदबुद्धि' मिल सके, यही इन लोगों की सच्ची 'जागनी' होगी !